

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

30-सितम्बर-2014 15:37 IST

यू.एस. - इंडिया बिज़नेस काउन्सिल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाषण का मूल पाठ

भारत की विदेश मंत्री आदरणीय सुषमा स्वराज जी मेरे साथ आई हैं। यहीं पर हैं। भारत की प्रथम महिला विदेश मंत्री बनने का उनको सम्मान प्राप्त हुआ है।

आप सब ने मेरा स्वागत किया, सम्मान किया, इसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूँ। मैं आज कई लोगों से जब मिल रहा था, तो मैं देख रहा था, काफी पुराने मेरे परिचित चेहरे थे। जब मैं गुजरात में मुख्यमंत्री था तो Vibrant Investment Summit में बहुत बड़ा delegation आपकी तरफ से आता था। ऐसे कई पुराने परिचितों से आज मुझे मिलने का अवसर मिला। 2015 में फिर, जनवरी में गुजरात में Vibrant Summit हो रही है। अक्टूबर 9 को मध्य प्रदेश के इंदौर में Vibrant Summit हो रही है। मुझे विश्वास है कि भारत में जिस प्रकार से आप सबकी रुचि बढ़ रही है, ये ऐसे अवसर हैं कि जहां एक साथ, एक Roof के नीचे, आपको हिन्दुस्तान के Industrial World के, Business world के, Who's Who से रू-ब-रू होने का अवसर मिलता है। इसलिए मुझे विश्वास है कि आप इस अवसर को, इस मौके को नहीं छोड़ेंगे।

125 करोड़ लोगों का देश भारत, उसकी तरफ विश्व का ध्यान होना बहुत ही आवश्यक है। और भारत भी पूरी ताकत के साथ आर्थिक जगत में अपनी जगह बनाने का संकल्प करके आगे बढ़ रहा है। एक नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है। नए संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। किसी भी सरकार के लिए 3-4 महीने का अनुभव कोई बहुत बड़ी बात नहीं होती है। लेकिन इस छोटे अनुभव से मैं कह सकता हूँ कि भारत के आर्थिक दृष्टि से पीछे रहने के लिए मुझे एक भी कारण कहीं नजर नहीं आता।

पीछे क्यों है, इसका जवाब खोजने में अब समय बर्बाद करने की आवश्यकता नहीं है। सिर्फ, सिर्फ एक छोटा सा निर्णय करने की आवश्यकता है कि चलो, निकल पड़ो। और मैं विश्वास से कहता हूँ, इस एक छोटे से संकल्प से, तीन महीने के छोटे से कार्यकाल से मैं अनुभव करता हूँ कि देश तेजी से आगे बढ़ रहा है।

आखिरकार, कोई भी व्यापारी या उद्योगपति किसी देश के साथ नाता कब जोड़ता है? जब उसके अंदर एक विश्वास हो कि मैं जहां जा रहा हूँ, वह सही जगह है। मैं सही मुकाम पर जा रहा हूँ। ये विश्वास सबसे बड़ी अमानत होती है। पिछले तीन महीने में मेरी सरकार का एक प्रमुख काम रहा है कि किसी के पुराने, कुछ भी अनुभव क्यों न रहो हों, मेरे देश के लिए कोई भी पुरानी सोच क्यों न रही हो, अच्छे-बुरे अनुभव रहे हों, लेकिन वक्त बदल चुका है। इरादे बदल चुके हैं। मकसद बदल चुके हैं। इसलिए उन सारी बातों को छोड़कर मैं एक विश्वास जगाने में लगा हूँ। इतने कम समय में मैं ये विश्वास से कह सकता हूँ कि न सिर्फ हिन्दुस्तान के सवा सौ करोड़ देशवासियों में, बल्कि पूरे विश्व में भारत के प्रति एक नई विश्वास की चिंगारी प्रकट हुई है जिसकी रोशनी हिन्दुस्तान की तरफ लोगों को खींच के ले आ रही है।

कोई भी व्यवसायी, businessman हो, industrialist हो, मेरा अनुभव है - मैं 14 साल तक गुजरात का मुख्यमंत्री रहा हूँ और हम गुजराती लोगों का स्वभाव है - हमारी रगों में ही रुपये दौड़ते हैं। Business और Commerce - यह हमारे Nature में होता है। उसके कारण मैं उस अनुभव के आधार पर कहता हूँ कि Investor हो, व्यापार करने वाला व्यक्ति हो, वह सरकार से कोई कंसेशन-वंसेशन नहीं चाहता है। यह भ्रम है। सरकारी को लगता है, बिना समझे, कि हम टुकड़े फेंकेंगे तो उद्योगपति आएंगे। यह Reality नहीं है। मेरा अनुभव कहता है कि उनको Effective Governance चाहिए। उन्हें Easy Governance चाहिए। उन्हें Red tapeism से, उन मुसीबतों से बचने के लिए सुविधा चाहिए। Red Carpet मिले या न मिले, अगर Red Tapeism में फंस जाते हैं और उसने Plan किया हो कि 2014 में सोचा हो, 2016 में Production में जाना हो, लेकिन 2016 तक अगर ईंट भी नहीं रख पाए, तो उसके सारे Economics, सारे हाल-चाल खराब हो जाते हैं।

इसलिए उसके लिए आवश्यक होता है, Development-Friendly Environment और Development-Friendly Environment प्रदान करना सरकार की जिम्मेदारी है। उसके रुपयों की Security का भरोसा होना चाहिए। दूसरा, उसे चाहिए Proper Infrastructure। मैं Proper शब्द का उपयोग कर रहा हूँ। मैं नहीं कह रहा हूँ कि उन्हें World-Class

Infrastructure चाहिए। लेकिन जिस काम के लिए वह आया है, उसके अनुकूल यदि Infrastructure मिले, तो काम होता है। और तीसरी बात है, Peaceful Labor चाहिए। अगर Peaceful Labor है, Proper Human Resource available है, तो अपने औद्योगिक विकास को, व्यापारिक काम-काज को तेजी से आगे बढ़ा सकता है। इन्हीं सब बातों के अनुभव के आधार पर भारत सरकार ने देश को आगे ले जाने के लिए जो design तैयार किया है, जो roadmap तैयार किया है, उन सब बातों को ध्यान में रखते हुए हमने काम को आगे बढ़ाया है।

उसी प्रकार से देश का अर्थतंत्र भी Vibrant होना चाहिए। हम ये सोचे कि यह सब हो, पर मरा-पड़ा सरकार हो, मरा-पड़ा अर्थतंत्र हो, तो वहां कौन आएगा? सरकार के अपने Economic System में Vibrancy चाहिए। Fiscal Deficit कम होना चाहिए। Tax Terrorism का अस्तित्व खत्म होना चाहिए। Taxation System में सरलता होनी चाहिए। अगर इन चीजों को करते हैं, तो लोगों को सुविधा रहती है।

हमने सरकार में आने के बाद इन चीजों को प्राथमिकता दी है। कभी-कभी सरकारों का उत्साह रहता है, नए-नए कानून बनाना। क्यों? तो लोगों के मदद के लिए कानून बना रहे हैं। लेकिन मेरा कहना है कि शायद कानून ही लोगों के लिए बोझ बन जाते हैं। और इसलिए मैंने एक काम शुरू किया है, कानून खत्म करने का। मैंने एक committee बिठाई है, जिसको काम दिया है कि जो गैर-जरूरी कानूनों की भरमार है, उसको खत्म करो।

आप देखिए, आप बाहर से आए हैं। और अगर खिड़की खुली नहीं है तो कैसा अनुभव होता है? और अगर खिड़की खुली है, जरा हवा आती है, तो मन को कितनी प्रसन्नता होती है? उसी प्रकार से सरकारी व्यवस्था में जितने कम कानून हों, उतने Fresh air की अनुभूति होती है। और इसलिए मेरी कोशिश रहती है कि कानून के झाल से निकल के एक सरल कानून हो, एक सरल व्यवस्था हो। व्यवस्थाओं को चलाएं।

दूसरा मेरा मत है: "Government has no Business to be there in Business". ये सरकार का काम नहीं है व्यापार करना। लोग हैं, सामर्थ्यवान हैं। हमारा काम है Facilitator का, एक अवसर पैदा करने का। और हमारी ये भूमिका रहेगी। हमारे यहां जितने PSU है, अभी हमने एक बहुत बड़ा Decision लिया है। करीब-करीब \$10 Billion के disinvestment का proposal already मैंने पारित कर दिया है। इतने कम समय में किसी एक सरकार ने इतने बड़े disinvestment का decision लिया हो, यह शायद पिछले 50 साल के इतिहास में पहली बार, हिन्दुस्तान की किसी सरकार ने किया है।

उसी का नतीजा है, लोगों को भरोसा हो रहा है। मैं disinvestment भी उस जगह पे कर रहा हूं, जो कि हमारे लिए, सरकार के एक प्रकार से कमाऊ बेटे हैं। ऐसे Institutions में initiative लिया है। मैं मानता हूं कि हम बाजार में जाएंगे। अपने आप लोग इसका फायदा उठाएंगे। गरीब लोगों को फायदा मिलेगा।

उसी प्रकार से आर्थिक व्यवस्था तेज हो, उसकी एक आवश्यकता है ease of Business। पहले भारत का Ranking जो था। लेकिन इन दिनों मैंने सरकार के अधिकारियों से कहा है कि मुझे इस Ranking पर ease of Business में रहना नहीं है। उसको कम करना है और उसको कम करने के ये-ये Parameters हैं। ये-ये Initiatives हैं। ये-ये जिम्मेदारियां हैं। आज मैं विश्वास से कह सकता हूं, Within 6 month, इन सारी चीजों को लागू कर देंगे। Ease of Business के जितने Ranking के Parameters हैं, उसमें हम एक नई ऊंचाईयों को पार कर देंगे और कोई भी Business House हो, को भी Industrial House हों, उसको अगर हिन्दुस्तान में आना है, तो बहुत सरलता रहेगी।

उसी प्रकार से हम digital world में रहते हैं। हम नंबर लगाए, डायरी देखें, नाम निकाले, फिर नंबर लगाएं। वह जमाना चला गया। अब एक click से आज Communicate करते हैं। इतनी दुनिया Fast हो गई है। अगर सामान्य व्यक्ति का जीवन इतना बदल चुका है और सरकार वहीं की वहीं रह जाएगी, तो कौन इस सरकार पर भरोसा करेगा? कौन इस सरकार के आधार पर चलेगा? वह सरकार ही irrelevant हो जाएगी। सरकार वो होनी चाहिए जो समाज से दो कदम आगे चलती हो। समाज की आवश्यकताओं से दो कदम आगे होनी चाहिए सरकार को। सरकार अगर समाज की आवश्यकताओं से 10 कदम पीछे है, वह फासला वो कभी भर नहीं पाएंगे और वह समाज के भरोसे देश को आगे बढ़ाने की संभावना सरकार को छोड़ देनी चाहिए।

इसलिए सामान्य जन-व्यवस्था जिन बातों को लेकर चलता है, सरकार को दो कदम आगे ले जाना चाहिए। इसलिए सरकार ने Initiative लिया है digital India का। मैं चाहता हूं कि Mobile Governance हमारे देश में क्यों न हो। मैं कल President Obama से बड़ी विस्तार से... इस विषय में हम दोनों की रुचि समान है, बराबर हमारी Wave length मिलती है। तो काफी विस्तार से हमने बातें की कि उसको क्या अनुभव आए! मेरे क्या अनुभव आए। हम इसमें कैसे काम कर सकते हैं? Digital India के लिए अमेरिका और भारत साथ मिल कर के कैसे काम कर सकते हैं? लेकिन मैं चाहता हूं,

हमने जो Make In India Movement शुरू की है, उस Make In India Movement को मैं पूरा का पूरा Digital network से जोड़ रहा हूँ। आप कोई भी Industrial house हैं, उसको अगर भारत सरकार से संपर्क करना है तो mobile से कर सकते हैं। उसकी फाइल कहां है, उसका Proposal कहां है, उसका Position क्या है - वह अपने mobile पर देख पाए, मैं ऐसी स्थिति पैदा करना चाहता हूँ। Transparency चाहिए।

मैं जब गुजरात में था, तब Specially मैंने Environment department के लिए काम किया था। सामान्य रूप से Environment department में जब application जाती है तो उसको भरोसा नहीं होता है कि मोक्ष कब होगा? उसको भरोसा ही नहीं होता। इतनी queries आती-जाती है, इतनी queries आती-जाती है, कि वह चिंता में रहता है। तो मैंने वहां पर एक काम किया, फाइल आते ही online available हो और जिसकी फाइल हो उसे Password दिया जाए। वह Password से देख सकता है कि आज उसकी फाइल कहां move कर रही है, कहां अटकी पड़ी है। और कहीं पर भी अटकी पड़ी है तो उसे सिर्फ मुझे SMS करना होता था और उसे पता चल जाता था कि उसका काम होने लगा है। और उसके कारण इतनी Transparency आ गई, इतनी Speed आ गई - उन्हीं प्रयोगों को केंद्र में भी लागू किया जा सकता है।

हम इस Technology का उपयोग good governance के लिए करना चाहते हैं। Effective governance के लिए करना चाहते हैं, Ease of Business के लिए करना चाहते हैं। सारी Business community हो, Industrial community हो, उसको immediate Make In India कार्यक्रम के द्वारा हम जोड़ना चाहते हैं।

सरकार, सिर्फ शासन में बैठे हुए लोगों के पास ही बुद्धि है, ऐसा मानने वाले हम लोग नहीं हैं। शासन के बाहर प्रतिभावान, तेजस्वी अनेक लोग होते हैं। हम Public Private Partnership पर चलने का प्रयास करते हैं। हम लोगों के सुझाव लेकर के चलते हैं। लोगो से पूछते हैं, हम कोई भी Policy ले करके आते हैं, तो जनता का Opinion मांगते हैं, उसका Feedback मांगते हैं। हम Policy को और People-Friendly कैसे बनाएं, उस दिशा में काम कर रहे हैं। एक प्रकार से हमारा प्रयास ये रहता है कि हमारी पूरी सरकार की भूमिका एक Facilitator की हो। कोई भी उद्योगपति या Businessman आने वाला हों तो उसका क्या Requirement है, उसको कहें।

कई लोग मेरा एक उदाहरण देते हैं बाहर Tata Nano का। लोग कहते हैं कि मोदी ने 45 मिनट में Tata Nano का निर्णय कर लिया था। इसका नाम सरकार है। ऐसा कहके मेरी सरकार की बड़ी तारीफ हुआ करती है। लेकिन मैं उसके सिवा एक उदाहरण आज समझाना चाहता हूँ कि हम कैसे काम करते हैं। मैं जब गुजरात का मुख्यमंत्री था तो मेरे पास 40-45 साल के एक नौजवान आए। वह मूलतः तो Indian Origin थे, पर उनके Forefathers अफ्रीका चले गए होंगे। उसके बाद वो Canada चले गए। मुस्लिम सज्जन थे, मिलने आए। यहां Industry लगानी है, Business करना है। मैंने कहा - आइए भाई, बैठिए। लेकिन पता नहीं क्यों उनका Confidence level बहुत poor था। Communication Skill भी बहुत Poor थी। 5-10 मिनट तो मैं उसको झेल रहा था, लेकिन मैं समझ नहीं पाता था कि क्या करना चाहते हैं। मुझे लगता था कि ये ऐसे ही आ गया है और मेरा समय खपा रहे है। तो मैंने बड़ी मुश्किल से नमस्ते करके उन्हें निकाला।

मैंने कहा ऐसा करो, आपके जो काम है, इस प्रकार के काम के लिए आप बड़ौदा चले जाइये। बड़ौदा के कलेक्टर को मैं फोन करके कहता हूँ, वह आपसे मिलेंगे और आपको सारी बातें समझाएं। आप उन्हीं से बात कीजिए। तो वो बेचारा पहली बार India आया था, वह मूलतः तो हिन्दुस्तान को था, पर पहली बार आया था, वो बेचारा चला गया। मुझे भी लगा की जान छूटी, वो सर खा रहा था।

13 महीने के बाद वह सज्जन फिर से आए - after 13 months। मेरे स्टॉफ ने मुझे कार्ड दिया तो मैंने कहा, ये वहीं है। वो मेरा समय बर्बाद करके गया था तो मैंने कहा, मना कर दो। तो वो बोले नहीं-नहीं, वह तो Invitation देने आया है। तो मैं चौंक गया। मैंने कहा किस बात का, तो बोला, उसका कारखाना हो गया, उसके उद्घाटन के लिए। आप कल्पना कर सकते हैं? मैंने कहा, बुलाओ भाई उसको बुलाओ। वह आया, मैंने कहा, भाई तुम तो एक बार गए तो फिर आए ही नहीं। तो बोले, मुझे जरूरत ही नहीं पड़ी। आपने जहां मुझे भेजा था मेरा सारा काम हो गया। मेरा कारखाना तैयार हो गया। आप उद्घाटन के लिए आइये।

फिर उसने मुझे कहा कि अभी तो आना है, फिर 6 महीने के बाद दोबारा आना है। मैंने कहा क्यों, अभी तो उद्घाटन करेंगे, लेकिन 6 महीने के बाद मेरे Chairman आएंगे। उस दिन पहला Product market में रखेंगे। उस दिन भी आइये। मैंने कहा, देख यार, तूने जिस प्रकार का कमाल किया है, मैं मन से कहता हूँ। मैं तुम्हें बधाई देने के लिए तुम्हारी फैक्ट्री के उद्घाटन के लिए मैं खुद आऊंगा। और मैं गया। 6 महीने के बाद दोबारा उसने बुलाया, दोबारा गया। आपको जान करके आनंद होगा, जिस दिन वह मुझे मिला, और जिस दिन पहला Product market में रखा, इस बीच में 19 months Total हुए, 19 months। और पहला Product क्या था? Delhi Metro train का कोच।

हम मिल करके, आपका भी भला हो, मेरे देश का भी भला हो, मानव जाति का भी भला हो। हम सब नई Technology में खोज करते हुए नए आविष्कारों को प्राप्त करते हुए विकास की नई ऊचाईयों को प्राप्त करते हुए आगे बढ़ें।

मेरी आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

अमित कुमार / महिमा वशिष्ट / शिशिर चौरसिया / लक्ष्मी

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

25-सितम्बर-2014 20:38 IST

'मेक इन इंडिया' वैश्विक पहल के आगाज के मौके पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के भाषण का मूल पाठ

मंच पर विराजमान मंत्रिपरिषद के मेरे सभी साथी,

भारत के उद्योग और व्यापार जगत से जुड़े हुए सभी वरिष्ठ महानुभाव,

देश-विदेश में अनेक स्थानों पर ये कार्यक्रम simultaneously चल रहा है - वहां भी उपस्थित सभी उद्योग जगत के सभी महानुभाव,

मैं सबसे पहले आपसे क्षमा मांगता हूं। मैं देख रहा हूं कि अनेक business leaders को आज इस सभागृह में बैठने के लिए जगह नहीं मिली है। बहुत बड़ी मात्रा में सबको खड़ा रहना पड़ रहा है। इस असुविधा के लिए मैं आपसे क्षमा चाहता हूं। इस असुविधा का कारण यह भी है कि इस सभागृह को पहले कभी ऐसी आदत नहीं थी।

मैं सारे Business Leaders को सुन रहा था। हमारी मंत्री महोदया ने भी पिछले कुछ समय में किस प्रकार से काम हुआ, उसकी चर्चा की। फिल्म के द्वारा भी महत्वपूर्ण initiative क्या-क्या लिए गए हैं, ये आपके सामने प्रस्तुत किया। इतना देखने के बाद, सुनने के बाद, मैं नहीं मानता हूं कि अब मुझे आपको कुछ अतिरिक्त भरोसा दिलाने की जरूरत है कि "Make in India!"

क्या हुआ पिछले सालों में? मैं जिससे भी मिलता था, पिछले दो-तीन साल में, हर कोई यही कहता था कि भई, अब तो कहीं बाहर जाना है। बिजनेस यहां से शिफ्ट करना है। इंडस्ट्री यहां से शिफ्ट करनी है। मैं उसमें राजनीतिक कारण नहीं देखता था, और न ही मैं इन बातों को सुन कर के राजनीतिक फायदा लेने के लिए कोई प्लान बनाता था। यह जब मैं सुनता या तो मुझे पीड़ा होती थी। क्या हुआ है मेरे देश को, कि मेरे ही देश के लोग अपना देश छोड़कर के जाने के लिए मजबूर हो जा रहे हैं?

आज जब मैं Make in India की बात लेकर के आया हूं तो हम नहीं चाहते कि मेरे देश का कोई उद्योग, कोई व्यवसायी, जिसेसे मजबूरन यहां से छोड़कर के बाहर जाना पड़े - वह स्थिति हमें बदलनी है। और मैं पिछले कुछ महीनों के अनुभव से यह कहता हूं कि हम ये बदल चुके हैं। व्यवसाय के क्षेत्र में जुटे हुए लोगों ने अपने आप पर से विश्वास खो दिया था। उनको लगता था कि हम दुनिया में टिक नहीं पाएंगे। अब हमारे पास यहां कोई चारा ही नहीं है। और जब व्यक्ति खुद पर विश्वास खो देता है, तब उसे खड़ा करना बड़ा मुश्किल होता जाता है। दूसरा उसका भरोसा टूट गया था - "पता नहीं, यार, सरकार कब क्या नीति बनाएगी। कब कौन सी नीति बदल देगी। पता नहीं, कब CBI आ धमकेगी।" ये जो मैंने आप लोगों से सुना था। कानून का राज होना ही चाहिए। जैसे Corporate Social Responsibility की चर्चा है, वैसे Corporate Government Responsibility का भी माहौल होना चाहिए। लेकिन, at the same time, शासन की भी जिम्मेदारियां होती हैं। सरकार का भी दायित्व होता है।

अभी देवेश जी कह रहे थे, निमंत्रण देने से रुपये थोड़े ही आते हैं। मैं इससे सहमत हूं। सबसे बड़ी आवश्यकता होती है, भरोसा, विश्वास। पता नहीं हमने देश को ऐसे चलाया है, कि हमने अपने ही देशवासियों की हर बात पर शक किया है। अविश्वास किया है। मुझे इस चक्र को बदलना है। हम अविश्वास से शुरू न करें। हम विश्वास से शुरू करें और कहीं कमी नजर आए तो सरकार intervene करे। जब हमने निर्णय लिया, लोगों को लगता होगा कि यह कोई Grand Vision नहीं है। आजकल मैं यह सब बहुत सुन रहा हूं, पढ़ रहा हूं। कोई बड़ी बात नहीं है। जब मेरी सरकार एक निर्णय करती है, self-certification की। आपको यह निर्णय बहुत छोटा लगता होगा। इसमें कोई विजन नजर नहीं आता है। लेकिन एक सरकार सवा सौ करोड़ देशवासियों की सत्यता पर विश्वास करने का निर्णय करे, इससे बड़ा कोई निर्णय नहीं हो सकता है। आपने हर बार उसे शक से देखा। वह certificate देता है तो आप कहते हैं, किसी gazetted officer से सर्टिफाई करा कर ले आओ। और gazetted officer क्या कहता है - अगर urgency है तो इतना, और देर से आआगे तो इतना। और क्या गारंटी है, उस पर भरोसा करें आप। क्या हम, हमारे देश के नागरिकों पर भरोसा नहीं कर सकते हैं क्या?

आखिर सरकार किसके लिए है? सरकार देश के सामान्य मानवों के लिए होती है। हर नागरिक के लिए होती है। और ये बदलाव की शुरुआत जो है, वह यहां नहीं रुकती है। Income Tax Department तक भी जाती है। क्योंकि यहां business community के लोग बैठे हैं, इसलिए मैं Income Tax Department कह रहा हूं।

कहने का मेरा तात्पर्य यह है कि हमारी सरकार का एक मंत्र है, वो सबसे पहली हमारी प्रतिबद्धता है। हम हर देशवासी पर भरोसा करके चलना चाहते हैं। ये विश्वास का जो माहौल है वो व्यवस्थाओं को परिवर्तित करने की भी ताकत रखता है। संसद की चारदीवारी में ही बनाकर के कानून बदले जा सकते हैं, ऐसा नहीं है, संसद की चारदीवारी के बाहर भी जन-जन के मन को जगाकर के परिवर्तन का प्रवाह लाया जा सकता है।

इन दिनों FDI की बड़ी चर्चा होती है। और वह स्वाभाविक भी है। लेकिन मैं उसे जरा अलग नजरिए से देखता हूं। भारत के नागरिकों के लिए भी FDI एक जिम्मेदारी है। सवा सौ करोड़ देशवासियों के लिए FDI एक जिम्मेदारी है। और व्यापार, उद्योग का विस्तार करने वाले, विश्व के लिए FDI एक Opportunity है। जब मैं ये कहता हूं कि भारत के नागरिक के लिए जिम्मेदारी है, बाहर के लोगों के लिए अवसर है, तो मेरे FDI की परिभाषा ये है: भारतीयों के लिए है, FDI – “First Develop India”. और विश्व के व्यापार व्यवसाय को विस्तार करने वालों के लिए मैं कहता हूं भारत एक Opportunity है, Foreign Direct Investment के लिए ये दो FDI की परिभाषा को लेकर के, इस दो पटरी पर विकास की यात्रा को आगे बढ़ाना चाहते हैं। पूरे विश्व में इस बात की चर्चा है- लोगों के मुंह में पानी छूटता है, भारत एक बहुत बड़ा बाजार है। पहली नज़र में ये लगना बड़ा स्वाभाविक है। मैं कोई बड़ा अर्थशास्त्री नहीं हूं, लेकिन जो देश या जो उद्योगपति या जो व्यापारी भारत को बहुत बड़ा बाजार मानता है, उसने कभी ये सोचा है कि उस बाजार में Purchasing Power है क्या? उस नागरिक का Purchasing Power है क्या? उसकी खरीद शक्ति बढ़ी है क्या? अगर वो संख्या में ज्यादा होगा और Purchasing Power नहीं होगी और उसकी जेब में दम नहीं होगा तो दुनिया इतने बड़े अवसर को खो देगा। इसलिए विश्व के उद्योग-व्यापार जगत को मैं यह बात कहना चाहता हूं कि आप भारत को सिर्फ बाजार मत मानिए। आप भारत के हर नागरिक को उस Potential के रूप में देखिए, जितनी तेजी से भारत का Middle Class का Bulk बढ़ेगा, गरीबी से लोग जितनी तेजी से Middle Class की ओर जाएंगे, उतना ही विश्व के लिए अनुकूल बाजार में वे Convert हो सकते हैं।

गरीबी से मध्य वर्ग की ओर ये Bulk बढ़ाना है, तो क्या करना होगा। सीधी-सीधी बात है - रोजगार के अवसर उपलब्ध करने पड़ेंगे। अगर गरीब को रोजगार का अवसर मिलेगा तो उस परिवार की Purchasing Power बढ़ेगी, गरीब से गरीब की Purchasing Power बढ़ेगी। आज वो एक चीज़ लेनी है, 3 रुपये, 5 रुपये 7 रुपये वाली मिलती है, तो 3 वाली पसंद करता है। फिर वो Quality की तरफ जाएगा। अभी गुजारा करने के लिए रह रहा है। रोजगार के अवसर जितने ज्यादा बढ़ेंगे, उतना ही Purchasing Power बढ़ने वाला है, हमारी Economy Generate होने वाली है।

ये रोजगार के अवसर कैसे बढ़ेंगे ? अगर आप बाहर से आ करके या यहां के लोग औद्योगिक विकास पर अगर ध्यान नहीं देंगे, Manufacturing Sector पर अगर ध्यान नहीं देंगे, रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं कराएंगे, तो ये पूरा चक्र कभी पूर्ण होने वाला नहीं है। इसलिए हम Make in India की जब बात करते हैं, तब सिर्फ आपको एक Competitive Situation के लिए ही हम Offer कर रहे हैं, ऐसा नहीं है। जब हम आपसे Make in India की बात करते हैं तब आपके उत्पादन के लिए एक बहुत बड़ा बाजार अपने आप खड़ा करने का हम अवसर देते हैं। आखिरकार Manufacturer को cost effective manufacturing की जितनी आवश्यकता है, उतनी ही उसको Handsome Buyer की भी जरूरत होती है, तभी तो उसकी गाड़ी चलती है। यहां मारुति कार कितनी ही क्यों न बनें, लेकिन खरीदार नहीं होगा तो? इसलिए हमें भारत की अर्थव्यवस्था में जिस प्रकार का बदलाव लाना है, उस बदलाव में एक तरफ Manufacturing Growth को बढ़ाना है, at the same Time उसका सीधा Benefit हिन्दुस्तान के नौजवानों को मिले, उसे रोजगार मिले ताकि गरीब से गरीब परिवार की आर्थिक स्थिति में बदलाव आए, वो गरीबी से Middle Class की ओर बढ़े और उसका Purchasing Power बढ़े तो Manufacturer की संख्या बढ़ेगी, Manufacturing Growth बढ़ेगा, रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं, फिर एक बार बाजार बढ़ेगा। यह एक ऐसा चक्र है। इस चक्र को आगे बढ़ाने की दिशा में यह महत्वपूर्ण काम आज हुआ है। ये शेर का कदम है। ये Lion का Step है - Make in India ।

जब मैं Make in India की बात मैं करता हूँ तब... आखिरकार मेरा मुख्यमंत्री के कार्यकाल का अनुभव है। व्यापारी या उद्योगपति कोई बहुत बड़ी Incentive Scheme से नहीं आते हैं। आप ये कह दो कि ये मिल जाएगा, वो मिल जाएगा, ये टैक्स फ्री करेंगे, वो टैक्स फ्री करेंगे। Incentive से काम होता नहीं है। हमें Development और Growth Oriented Environment Create करना होता है। ये जिम्मा सरकार का है। शासन में बैठे हुए लोगों ने, Financial Institution ने इन सारी व्यवस्थाओं की तरफ ध्यान केंद्रित करना होता है और तब जा करके investor के लिए एक Security का अहसास बनता है।

Investor पहले अपने investment की Security चाहता है, बाद में Growth चाहता है और फिर Profit चाहता है। वो पहले ही दिन Profit नहीं खोजता है। उसको Profit के लिए और 50 कंपनियां पड़ी हैं उसके पास। उसको ये चाहिए। सरकार का प्रयास है, हमने एक बाद एक जो कदम उठाए हैं, हम विश्वास दिलाना चाहते हैं कि आपका रुपया डूब नहीं जाएगा।

दूसरा उसको क्या चाहिए ? आज Ease of Business को लेकर दुनिया में Ranking होता है। मुझे अभी पिछले दिनों World Bank के चेयरमैन मिले थे, वो भी ये चिंता कर रहे थे। शायद उस समय 135 नंबर पे थे हम दुनिया में। Ease of Business में अब कौन रूकावट डालता है। अगर 135 से मुझे 50 पर आना है तो सिर्फ सरकार अकेली ये काम पूरा कर सकती है। सरकार अपने निर्णयों को, नियमों को खुलापन ला दे, सरलता से कामों को आगे बढ़ाएं, तो हम आज 135 से Ease of Business में नंबर 50 पर आकर खड़े हो सकते हैं। मैंने मेरी पूरी टीम को सेंसटाइज किया है और मैंने कहा है कि हम Scrutiny के नाम पर, और अधिक Perfection के नाम पर कहीं हम रूकावटें तो नहीं डाल रहे। मैं तीन महीने के अपने अनुभव से कहता हूँ कि आज दिल्ली सरकार में बैठी हुई मेरी पूरी Team, पूरी मेरी Bureaucracy सकारात्मक सोच के साथ मेरे से भी दो कदम आगे दौड़ रही हैं।

यही ताकत है इसकी। क्यों? उसको इस बात का भरोसा है, कि हां यह अवसर आया है। यह अवसर आया है। यह अवसर खोना नहीं है। सारी दुनिया एशिया की तरफ नजर कर रही है। पूरा विश्व दूढ़ रहा है। मुझे निमंत्रण देने के लिए समय बरबाद करने की आवश्यकता नहीं है। मुझे सिर्फ एड्रेस देने की कोशिश करनी है कि यह जगह है। वह आने के लिए तैयार है। पूरा विश्व आने के लिए तैयार है। लेकिन उसे पता नहीं है कि एशिया में जाएं तो कहां जाएं। और फिर वो सोचता है, जहां लोकतंत्र है, जहां Demographic Dividend है, जहां विपुल मात्रा में डिमांड है। ये तीनों एक साथ किसी भूभाग पर उपलब्ध हो तो पूरे ग्लोब पर अकेला हिंदुस्तान है, जहां ये तीनों एक साथ मौजूद है। जो इन तीनों को सकारात्मक रूप से उपयोग करता है।

हम Democracy का, Demographic Dividend का और Demand का, इनको सही तरीके से अगर तालमेल करते हैं, तो मुझे विश्वास है कि दुनिया को भारत का पता बताने के लिए हमें नहीं निकलना पड़ेगा। हर गली मोहल्ले में Vasco de Gama पैदा होंगे, जो हिंदुस्तान खोजते-खोजते यहां चले आएंगे।

ये इस विश्वास के साथ, हम कैसे आदमी हैं, और उसे क्या चाहिए? उसे effective governance चाहिए। सरकार होने से काम होता नहीं है। सरकार होने का अहसास होना चाहिए। उस दरवाजे पर जाएं तो उसको लगना चाहिए कि मेरी इस समस्या का समाधान यहां हो सकता है। या यहां से मुझे रास्ता मिलेगा कि यहां से किस रास्ते से कहां पहुंचना है। Effective governance। मैं सिर्फ good governance की बात नहीं कर रहा हूँ, मैं effective governance की बात कर रहा हूँ। और इन चीजों को पाने के लिए दो महत्वपूर्ण आधारों पर हम बल दे रहे हैं।

आखिर कर उद्योग लगाना है तो skilled manpower चाहिए। और skilled manpower भी requirement के अनुरूप होना चाहिए। कहीं पर टेक्स्टाइल इंडस्ट्री की संभावना है, लेकिन हम वहां पर स्किल डेवलपमेंट इंजीनियरिंग इंडस्ट्री के लिए कर रहे हैं, तो न इंजीनियरिंग इंडस्ट्री के स्किल वाला वहां नौकरी करने चला जाएगा और न स्किल वाले को रोजगार मिलेगा। हमें मैपिंग करना है। हम कर रहे हैं, कि कौन से ऐसे क्लस्टर हैं, कि वहां नेचुरल पोटेन्शियल इस प्रकार का है? उस नेचुरल पोटेन्शियल के अनुकूल ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट कैसे हो? वहीं पर इन्वायरमेंट इश्यूज को कैसे हैंडल किया जाए? और सस्टेनेबल ग्रोथ को लेकर के किन-किन बातों पर सरकार अपना फोकडेशन तय करे, उन-उन बातों पर आगे बढ़ना है। और अगर इस बात को हम कर रहे हैं, तो मुझे पूरा विश्वास है कि जो effective governance की बात हम कर रहे

हैं, वह skill development के द्वारा भी काम आ सकता है।

आज हमारे देश में सरकार की सोच, उद्योग की सोच, academic world की सोच और job seeker नौजवानों की सोच - क्या इन चारों का कोई संबंध है क्या? कोई मेल है क्या? I am sorry to say, नहीं है। हम tourism develop करना चाहते होंगे, लेकिन उस गांव में guide तैयार करने की व्यवस्था हमारे पास नहीं होगी। Guide कहीं तमिलनाडु में तैयार होता होगा और ताजमहल आगरा में होगा। कहने का तात्पर्य ये है, कि चीजें छोटी-छोटी होती हैं। हम अगर इन focussed activities को करते हैं तो हम अपने आप स्थितियों को बदल सकते हैं। और इसलिए skill development भी।

Academic world study करे कि आने वाले 20 साल में किस प्रकार के उद्योग की संभावना है। अगर पूरा विश्व eco-friendly environment, technology, global warming, इसी पर अगर केंद्रित हुआ है तो सीधी-सीधी बात है कि सोलर इनर्जी के लिए क्षेत्र खुल गया है। अगर solar engineering के लिए क्षेत्र हो जाएगा तो engineering college के students को solar engineering के equipment की manufacturing की training हो जाएगी। Solar Energy Equipment Manufacturing के लिए skilled labour चाहिए। skilled labour के लिए उसकी अभी से training शुरू हो जाए। Solar लगाने वाले उद्योगपतियों को पता चल जाए कि देखिए ये सारी व्यवस्थाएं हैं, ये हमारे बारमेड के पास बंजर भूमि पड़ी हुई है। आइए solar लगाइए और हिंदुस्तान को उजाला दीजिए। आप एक के बाद एक, अगर network बनाकर काम करते हैं, और ये काम सरकार का होता है। सरकार को facilitate करना होता है और सरकार जब "Facilitator" बनती है तो इच्छित परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। इसलिए, Skill Development को कैसे बल दिया जाए, Skill Development में भी हम Public-Private Partnership के model को लेकर आगे बढ़ना चाहते हैं।

हम उद्योगपतियों को भी, अगर आपको लगता है कि आपके industry के लिए 400 प्रकार के नौजवान चाहिए। हम कहेंगे आप ये ITI ले लीजिए। आपको जिस प्रकार का manpower चाहिए, यही locally आप उसको trained कीजिए। आपको बहुत अच्छा नौजवान मिल जाएगा। आपका कारोबार चलेगा। हमारी ITI चल जाएगी। हमारे नौजवानों को रोजगार मिल जाएगा। उसके परिवार की ताकत बढ़ेगी। उसकी खरीद शक्ति बढ़ेगी और economy अपने आप generate हो जाएगी। एक ऐसे चक्र को हमें चलाना है। और इसलिए, मैं अशोक चक्र की बात लेकर के आया हूं। यह हमारी आर्थिक विकास यात्रा का कैसे पहिया बने।

जब दुनिया औद्योगिक क्रांति के कालखंड में थी, उसके पहले हम सोने की चिड़िया के रूप में माने जाते थे। लेकिन जब दुनिया औद्योगिक क्रांति की सीढ़िया चढ़ रही थी, तब हम पिछड़ गए। क्यों? हम गुलाम थे। वह अवसर हमने खो दिया। उसके बाद आर्थिक चेतना का एक नया युग नया अवसर आया। और यह सदनसीब है कि यह एशिया का है। अब हमारा जिम्मा बनता है कि इसे भारत का कैसे बनायें। एक ऐसा मौका आया है, और हमारे पास सबसे बड़ा सामर्थवान है कि 65% पोपुलेशन 35 वर्ष से नीचे है।

मैं नहीं मानता हूं, कल की घटना के बाद अब हमारे टैलेंट को कोई question करेगा। भारत के नौजवान के टैलेंट को कोई question नहीं कर सकता है। कल के मार्स की घटना के बाद। सब चीजें इंडिजेनियस। देखिए, उसमें जो पुर्जे लगे थे ना, वह जिन फैक्ट्री में बने थे, उस फैक्ट्रियों की फोटो निकालनी चाहिए। देखने में लगे, छोटी-छोटी फैक्ट्रियां हैं, जहां एक-एक एक-एक पुर्जा बन करके पहुंचा है और उसमें सेमार्स का मिशन सफल हुआ है। टैलेंट में कोई कमी नहीं है। विश्वास को मार्स सक्सेस। ये विश्व को भारत के पहचान का अवसर मिलना चाहिए। भारत विश्व को अनुभूति दे कि ये टैलेंट है। सिर्फ हमारे पास 65% Population 35 वर्ष से नीचे है, ऐसे नहीं है, हमारे पास टैलेंटेड मैनपावर है। ये सामर्थवान मैनपावर है। उसको लेकर के हम चलना चाहता हूं।

दूसरी बात है, Digital India. कारपोरेट वर्ल्ड, औद्योगिक जगत, प्राइवेट लाइफ जिस प्रकार से डिजिटल वर्ल्ड के साथ तेजी से आगे बढ़ रही है। अगर सरकार और सरकारी व्यवस्थाएं पीछे रह गईं, तो मैं कल्पना कर सकता हूं कितनी बड़ी खाई पैदा होगी। पूरी समाज रचना एक तरफ, और शासन रचना दूसरी तरफ। इस खाई को भरने के लिए Digital India का मिशन

लिया है। पूरा गवर्नेंस मोबाइल गवर्नेंस की ओर क्यों न जाए।

आपको हैरानी होगी, मैंने आकर के, फर्स्ट शायद 10 Days हुए होंगे, एक काम मैंने क्या किया? मैंने कहा कि आप मुझे बताइए, सरकार में जो फार्म भरते हैं 10-10 पेज के क्यों होते हैं। आप भरते हैं ना। आप तो शायद नहीं भरते होंगे, आपके स्टाफ के लोग भरते होंगे। मैंने उनको पहले दिन कहा कि 10 पेज का एक पेज करो पहले। और मुझे खुशी है कि बहुत Department ने वो कर दिया। कोई कारण नहीं जी! ये सारी चीजें उपलब्ध होती हैं, हम बार-बार मांगते रहते हैं। कहने का मेरा तात्पर्य यह है कि Digital India के माध्यम से - जैसे Ease of Business की बात है - वैसे Easy Governance, Effective Governance चाहिए, Easy Governance चाहिए, उस पर बल लाना है। हर व्यक्ति को अपनी जानकारी अपनी हथेली में उपलब्ध होनी चाहिए और ये वो चीजें हैं जो हमें आगे बढ़ने के लिए अवसर देती हैं। उसे हम अवसर देना चाहते हैं।

लंबे अरसे से Look East Policy की चर्चा कर रहे हैं। हर किसी के मुंह से Look East वाली बात आती है। एक अच्छा अवसर है। लेकिन At the Same Time जब मैं आज Make in India की बात करता हूँ तब मैं Look East के साथ-साथ Link West की भी बात करना चाहता हूँ। एक तरफ Look East दूसरी तरफ Link West। हमने इन दोनों को जोड़कर एक ऐसी मध्यस्थ जगह पर खड़े हैं कि हम एक Global vision के साथ अपनी आर्थिक संरचना को नए Platform पर खड़ा कर सकते हैं और उस दिशा में हम आगे बढ़ना चाहते हैं। विश्व के पास जो कुछ भी श्रेष्ठ है, वो हमारे पास क्यों नहीं होना चाहिए। ये मिजाज इस देश का क्यों नहीं होना चाहिए। व्यापार के नए क्षेत्र खुल रहे हैं, मेरे शब्द लिख लीजिए, आप तो उद्योग-व्यापार जगत के मित्र हैं, मैं नहीं जानता हूँ कि आपने इस दिशा में सोचा होगा या नहीं सोचा होगा। हो सकता है छोटी, दो चार कंपनियां करती होंगी काम।

आने वाले समय में हिन्दुस्तान में Waste में से Wealth के एक बहुत बड़े Business की संभावना है। Waste में से Wealth! हम 500 शहरों में Solid Waste Management और Waste Water Treatment का काम बढ़ाना चाहते हैं। Public Private Partnership से कराना चाहते हैं। उसी गांव के कूड़े कचरे से आप बिजली पैदा करके बिजली के कारखानेदार बन करके बिजली बेच सकते हैं। एक बहुत बड़ा ये Revenue Model आ रहा है। हम सोचें, अभी से सोचें और मैंने देखा है जो दूर का सोचते हैं न .. Multi National कंपनियां आलू-टमाटर बेचने के लिए निकल पड़ी थीं। क्यों मुकेश भाई! क्योंकि उनको पता था, कितना बड़ा Market है। वैसे ही बड़ी-बड़ी कंपनियां इस 'Waste में से Wealth' के लिए आने के लिए पूरी संभावना है और भारत में हमने जो सफाई अभियान चलाया है, एक नया क्षेत्र खुल रहा है। मैं निमंत्रण दे रहा हूँ उस प्रकार के उद्योग व्यापार के लोगों को। छोटी-छोटी नगरपालिकाएं बैठ करके, उसको भी एक Revenue Model बना करके आईए। हम आपको निमंत्रण देते हैं।

अवसर बहुत हैं। जिस प्रकार से Manufacturing सैक्टर का महत्त्वपूर्ण है उसी प्रकार Infrastructure भी महत्वपूर्ण है। भारत अब उस Infrastructure से नहीं चल सकता है, जहां हम पहुंचना है। ज्यादा ज्यादा हमारे देश में Infrastructure की बात होती थी तो रेल, Road और Port, Airport ... बात पूरी। Next generation Infrastructure की ओर हमें जाना है। हमें Highways भी चाहिए, हमें i-ways भी चाहिए। When I say i-ways, I mean Information-ways and that is for the Digital India. हमें.. Electric grid है तो गैस की भी grid चाहिए, हमें water grid भी चाहिए। हमें Optical Fibre का नेटवर्क भी चाहिए। हम एक ऐसे हिन्दुस्तान का सपना देख रहे हैं, जिसमें Private Party को अपना नसीब आजमाने के लिए बहुत बड़ा अवसर है।

Public Private Partnership के Model पर, हम आज जहां हैं वहां से अपने आप को Upgrade कैसे करें। जिन क्षेत्रों में हमने कदम नहीं रखा है, वहां कदम कैसे रखें। हमने Port Development तक अपने आप को केंद्रित किया। समय की मांग है हम Port led Development की ओर आगे बढ़ें। Port हो, Warehouses का नेटवर्क हो, Cold Storage का नेटवर्क हो, Roads हों, रेल हो, Port के साथ Airport भी हो। ये जब तक हम पूरा एक Cluster के रूप में Develop नहीं करते हैं, हम Global Market की दुनिया में अपनी जगह नहीं बना सकते और इसलिए हम उस पर बल देना चाहते हैं। एक बहुत बड़ा क्षेत्र है जिसमें आप आ करके अपना नसीब आजमा सकते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि Infrastructure भी सिर्फ सुख-सुविधा का विषय नहीं है। अगर हमें Tourism Develop करना है - ऐसा अनुमान है कि दुनिया में सबसे ज्यादा Growth अगर किसी Industry का है तो वो Tourism Industry का है। क्या भारत इसको कैचर कर सकता है? तो टूरिज्म के लिए भी एक बहुत बड़े इंप्रोस्ट्रक्चर की आवश्यकता है। Hospitality industry के लिए बहुत बड़ा स्कोप है हमारे यहां। इतनेसारे avenues हैं। उन avenues को कैसे लें।

इसलिए मैं आप सबसे आग्रह करता हूं। जो भी सोचते थे, बस अब जाएंगे कहीं। मैं कहता हूं, अब जाना नहीं है कहीं। यह देश आपका है। यहां इतना फलो-फूलो, फिर बाहर कदम रखो, तो उसका एक आनंद और है। मजबूरन जाना पड़े, इसका कोई आनंद नहीं है और मैं चाहता हूं, हिंदुस्तान की कंपनियां भीमल्टी नेशनल बनें। हिंदुस्तान की कंपनियों के भी दुनिया के अंदर अपने हाथ-पैर हों। यह हम चाहते हैं। लेकिन अपनी धरती को हम मजबूत बनाएं। यहां के नौजवानों को रोजगार देने के लिए हम कदम उठाएं। और ये एक ऐसी सरकार है जो विकास को समर्पित है। यह ऐसी सरकार है, जिसका ये political agenda नहीं है - article of faith है। और इसलिए मैं कहने आया था और मेरा विश्वास मैं बताता हूं जी। मैं जब गुजरात में था और मैं बड़े विश्वास से कहता था, कि वही मुलाजिम, वही सरकार, वही दफ्तर, वही फाइलें, वही लोग, इसके बावजूद भी दुनिया बदली जा सकती है।

मैं आज दिल्ली में आकर के कह सकता हूं, वही आफिस, वही अफसर, वही फाइलें, वही गाड़ियां, वही तौर-तरीके, उसके बावजूद भी उसमें जान भरी जा सकती है, हिंदुस्तान की दिशा बदली जा सकती है। हिंदुस्तान का भाग्य भी बदला जा सकता है। इस विश्वास के साथ मैं आगे बढ़ा।

हमारी विकास यात्रा में सबसे बड़ी रुकावट ये बनी है - कुछ निर्णय केंद्र करता है, ज्यादा से ज्यादा implementation राज्य में करना पड़ता है। और अगर दोनों के बीच मेल नहीं है, तो उद्योगपति को समझ में नहीं आता है, investor को समझ में नहीं आता है कि दिल्ली जाऊं कि राज्य सरकार के पास जाऊं? वह उलझन में रहता है। अब ये उलझन नहीं रहेगी। मेरा ये मत है कि राज्यों का विकास भी भारत के लिए ही होता है। अगर राज्यों में investment आता है, तभी तो भारत में investment आने वाला है। राज्य और केंद्र मिल कर के एक टीम के रूप में काम करें, कंधे से कंधा मिलाकर के काम करें, केंद्र के पास कोई proposal आए तो राज्य के पास केंद्र खुद चला जाए, आइए भाई मिल करके हम क्या मदद कर सकते हैं। राज्य के पास कोई proposal आ जाए, केंद्र के मदद की जरूरत हो तो खुलेआम राज्य केंद्र के पास आ जाएं। दोनों मिलकर के रास्ता निकालें। चीजें आगे बढ़ने लगे। ये एक बहुत बड़ी आवश्यकता पैदा हुई है। और इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए केंद्र और राज्य को मिलना होगा।

आप देखिए, हम Current Account Deficit की चर्चा करते हैं, Export-Import Imbalance की चर्चा करते हैं, लेकिन किसी राज्य को पूछो कि आपके यहां Export Promotion के लिए कोई activity है क्या? नहीं है। उसको लगता है कि यह केंद्र का काम है। मैंने आते ही राज्यों को बुलाया। मैंने कहा कि देखिये, Export Promotion, क्योंकि manufacturer आपके यहां है, उसका आप हिम्मत बढ़ाइए, उसको आप विश्वास दीजिए। वह Export करने के लिए आगे बढ़े। भारत सरकार के नीति नियम उसके काम आए। हम दोनों मिलकर के काम करेंगे, तो export करने वाले जो उद्योगपति हैं, उनको बल मिलेगा। और अपनी चीजों को बाहर बेचेगा।

आज, आज External Affairs Ministry क्या उनके काम आती है क्या? वो कहीं राज्य में बैठा होगा, किसी कोने में बैठा होगा, कोई oil engine बनाता होगा। कौन पूछता है वहां। वह अपने मेहनत से करता होगा। अब राज्य हो या केंद्र, Export Promotion के लिए एक facilitator के नाते हम proactive aggressive role करने का जिम्मा उठाने के लिए तैयार हुए हैं। अब देखिए, इससे कितना बड़ा फर्क होगा। तो हम जैसे कहते हैं Make in India, at the same time, आपको global market आगर capture करना है तो उसके लिए भी facilitator के रूप में आपके साथ खड़े रहने के लिए हम तैयार हैं। ऐसे अनेक क्षेत्र हैं।

हमने Financial Institutions को बुलाया। देखिए कैसे बदलाव आता है। अभी हमने Inclusive Growth को ध्यान में रखते हुए

हमने भारत के गरीब से गरीब व्यक्ति को Bank Account से जोड़ने का अभियान उठाया। ये पहले नहीं हुए, ऐसा नहीं है जी। शुरू में तो लोग कहते थे, यह हमारे समय शुरू हुआ, लेकिन अब नहीं कहते हैं। क्योंकि उनको पता चल गया, कि हमारे समय में शुरू हुआ था, कहने से पता चल जाएगा कि हम विफल हुए थे। ये पता चल जाता है। आप कल्पना कर सकते हैं, इतने कम दिनों में, यही बैंक के लोग चार करोड़ से अधिक लोगों के खाते खोलते हैं। और मैंने ये कहा था कि भई जीरो बैलेंस से भी खाते खोल सकते हो। और मैं हैरान हूँ, लोगों ने 1500 करोड़ रुपये जमा कराये।

जीरो बैलेंस के आफर होने के बावजूद सामान्य लोग 1500 करोड़ रुपये बैंक में डाल करके खाता खुलवाता है, ये विश्वास है। यही तो विश्वास भी ताकत है। Banking Sector के लोग इतनी तेजी से move करे - ये सरकार कितनी तेजी से आगे बढ़ रही है, इसके लिए एक महत्वपूर्ण मानदंड बन सकता है। Financial Institutions भी growth और development के साथ अपने आप को जोड़े। Grass-root level पर world spread, हर कोने में इस विकास की इस यात्रा को आगे बढ़ाए, उस दिशा में हम प्रयास कर रहे हैं। मेरा कहने का मतलब ये है कि आज Make in India, ये नारा नहीं है। ये Make in India, ये निमंत्रण नहीं है। Make in India, ये हम सबकी जिम्मेदारी है।

हम सब जिम्मेदारी के साथ अगर आगे बढ़ेंगे, और हम भारत के लोग एक बार करेंगे तो दुनिया के लोग हमारे यहां आएंगे। वे खोजते हुए आएंगे, आप विश्वास कीजिए। और इसलिए उन दोनों FDI पर हमें बल देना है। First Develop India, at the same time Foreign Direct Investment. उसको लेकर के आगे बढ़ें।

फिर एक बार, आप सब समय निकाल कर के आए, इसे बहुत बड़ी initiative को प्रारंभ करते समय आप हमारे साथ जुड़े, विदेश से भी बहुत बड़ी मात्रा में मेहमान आए। दुनिया के कई देशों में और हिंदुस्तान के सभी राज्यों में सभी व्यापारी संगठनों के द्वारा इस कार्यक्रम को live telecast किया जा रहा है। वहां भी लोग बैठे हैं। मैं आप सबको विश्वास दिलाता हूँ, आइए, हम सब मिलकर के इस Make In India concept को जिनकी-जिनकी जिम्मेदारी है, उसको हम पूरा करें। हम आगे बढ़ें, manufacturing sector में हम फिर एक बार नई ऊंचाईयों को पार करें और देश के गरीब से गरीब नौजवान को रोजगार उपलब्ध करायें। गरीब को रोजगार मिलेगा, भारत के आर्थिक चक्र वो और गति से चला पाएंगे। इसी एक विश्वास के साथ आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं। नवरात्रि की आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

मेरे व्यक्तिगत जीवन में, मेरे राजनीतिक यात्रा के जीवन में भी आज का दिवस बड़ा महत्वपूर्ण है। आज 25 सितंबर, जिनके आदर्श और विचारों की प्रेरणा से लेकर के हम लोगों ने राजनीतिक यात्रा शुरू की, वो पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की आज जन्म जयंती है। जिन्होंने एकात्म मानव दर्शन दुनियाको दिया है। ऐसे महापुरुषों के जन्मदिन पर, जो जिए देश के लिए, वो जूझते रहे देश के लिए, उनके चरणों में मेक इन इंडिया सपना समर्पित करने का अवसर मिल रहा है। उस सपने को साकार करने के लिए संकल्पित हैं।

नवरात्रि शक्ति संचय का पर्व होता है। इस शक्ति संचय के पर्व पर भारत भी शक्ति संचय कर एक शक्तिशाली राष्ट्र बने, इस सपने को लेकर के आगे बढ़ें, इसी एक प्रार्थना के साथ आपकी बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

अमित कुमार / महिमा वशिष्ठ / शिशिर चौरसिया / रजनी / तारा / सोनिका-3941

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

02-सितम्बर-2014 17:16 IST

निक्केई तथा जापान विदेशी व्यापार संगठन (जैट्रो) द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप, में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए भाषण का मूल पाठ

उद्योग जगत के सभी वरिष्ठ महानुभावो,

मैं जैट्रो का आभारी हूं, निक्केई का आभारी हूं, कि मुझे आज आप सबके साथ बातचीत करने का सौभाग्य मिला है। मैं जब यहां आ रहा था तो, ये सभी वरिष्ठ महानुभाव मुझे बता रहे थे और बड़े आश्चर्य के साथ बता रहे थे कि हमारे इतने सालों में इतना बड़ा गैदरिंग पहली बार हुआ है। मुझे कह रहे थे कि 4000 लोगों ने अप्लाई किया था, लेकिन हमारे पास एकोमोडेशन पूरी नहीं होने के कारण आधे लोगों को निराश करना पड़ा है। ये इस बात का संकेत है कि अब जैसे भारत 'लुक ईस्ट' पालिसी लेकर चल रहा है, वैसे जापान 'लुक एट इंडिया' इस मूड में आगे बढ़ रहा है।

जब वाजपेयी जी भारत के प्रधानमंत्री थे और एकसीलेंसी मोरी जी यहां प्रधानमंत्री थे, तब से यह रिश्ता बड़ा सघन बना। मेरा भी सौभाग्य रहा, मैं पहले भी आया। मैंने हर बार देखा कि जापान जिस प्रकार की कार्य संस्कृति का आदी है, जापान जिस प्रकार के गवर्नेंस का आदी है, जापान ने जिस प्रकार से इफीशिएंसी और डिसेप्लिन को आत्मसात किया है, अगर उस इन्वायरमेंट को प्रोवाइड करते हैं तो जापान को भारत में भी अपनापन महसूस होगा।

तब मैं गुजरात का मुख्यमंत्री था, 2007 में, मैं यहां आया। जो बातें आप से सीखीं, समझीं, देखीं, उसको मैंने भली-भांति यहां लागू किया था। 2012 में आया, मैंने दुबारा उसको और बारीकी से देखा फिर उसको लागू किया। आज परिणाम यह हुआ कि जब मैं भारत के प्रधानमंत्री के रूप में आपके बीच आया हूं, तब मैं आपको विश्वास दिलाने आया हूं, कि आपको जापान के बाहर कहीं नजर डालनी है तो, मुझे नहीं लगता है कि अब आपको इधर-उधर देखने की जरूरत है।

अब एक ऐसी जगह है, जो आपकी चिर-परिचित है। सांस्कृतिक रूप से तो चिर-परिचित है, लेकिन अब अपने आप के विस्तार के लिए, अपने आप को ग्रो करने के लिए, आप जिस जगह की तलाश में हैं, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, मैं आपको निमंत्रण देता हूं, शायद भारत से बढ़कर के आप के अनुकूल कोई जगह नहीं है। ये मैं विश्वास दिलाने आया हूं।

मुझे अभी सरकार में सिर्फ 100 दिन हुए हैं। एकसीलेंसी मोरी जी के साथ भी मेरा संबंध बहुत पुराना है और प्रधानमंत्री आबे जी के साथ भी बहुत पुराना संबंध है। पिछले तीन दिनों में मैंने देखा है कि जापान का भारत के साथ जुड़कर के अनेक क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए बहुत सारी संभावनाएं हैं। उसमें हमारा विश्वास पक्का हो गया है। कल का हमारा ज्वाइंट स्टेटमेंट आपने देखा है। मैं समझता हूं, किसी भी जापान के उद्योगकार के लिए भारत में आकर के कार्य प्रारंभ करना, इससे बड़ा स्ट्रांग मैसेज कोई नहीं हो सकता है। मेरी सरकार बनने के बाद मैंने एक विजन के रूप में लोगों के सामने रखा है, 'मेक इन इंडिया'।

मैं छोटा था, तो कोई कहता था 'मेड इन जापान', तो हम लोगों का मन करता था कि कुछ देखने की जरूरत नहीं है कि किस शहर में बना है, किस कंपनी में बना है। ले लो, ये प्रतिष्ठा थी। हम 'मेक इन इंडिया' कह रहे हैं, इसका मतलब यह है कि हम ऐसा इन्वायरमेंट आपको देना चाहते हैं, कि आपकी वैश्विक मांग है, जो आपके प्रोडक्ट की, उस वैश्विक मांग को अगर पूरा करना है तो आज जापान, जो कि हाई कॉस्ट मैन्यूफैक्चरिंग की ओर चल पड़ा है, आपकी पूरी इकोनोमी हाई कॉस्ट एंड वाली बनती जा रही है। इसलिए आपके लिए बहुत अनिवार्य है कि लो कॉस्ट मैन्यूफैक्चरिंग की संभावनाएं हों। 'ईज आफ बिजनेस' का वातावरण हो। स्किल्ड क्वालिटी मैनपावर अवेलेबल हो।

तो मैं विश्वास से कहता, जो दस साल में मिरैकल आप जापान में रह कर के आपकी कंपनी का करते हैं, आप वो मिरैकल दो साल के भीतर-भीतर हिन्दुस्तान में कर सकते हैं। इतनी संभावनाओं का वो देश है आप विश्व में अपने प्रोडक्ट को अगर पहुंचाना चाहते हैं, और कंपीटिटिव भी मार्केट है। अगर विश्व में अगर प्रोडक्ट पहुंचाना चाहते हो तो, इट इज ए गॉड गिफ्टेड लोकेशन है, इंडिया का। हमारा बहुत ही वाइब्रेंट सी कोस्ट है, वहीं से आप वेस्टर्न पार्ट आफ दि वर्ल्ड, मिडिल ईस्ट से लेकर, आगे कहीं भी जाना है, मैं समझता हूं, इससे बढ़कर कोई सुविधा नहीं होती है।

जब सुजूकि, मारुति उद्योग के संबंध में लोग, मुझसे मिलने आते थे, तो मैंने उन्हें एक हिसाब समझाया था। मैंने कहा- आप गुड़गांवा में कार बनाते हैं और एक्सपोर्ट करते हैं, तो समुद्र तट पर जाने में आपकी कार को जाने में 9000 रुपए का खर्च लगता है। लेकिन समुद्र तट पर यदि आप गाड़ी बनाओगे तो हर कार पर आपका 9000 रुपए बच जाएगा। तो उन्होंने कहा कि मुझे तो यह व्यापारिक गुरु किसी ने सिखाया ही नहीं और वह एक बात ऐसी थी कि उनको निर्णय करने में क्लिक कर गई।

पिछले दिनों में मैंने इतने वहां पर इतने महत्वपूर्ण निर्णय किये, जैसे - डिफेंस के सेक्टर में। एक समय था, मेरे यहां इतने सारे रिस्ट्रीक्शंस थे, डिफेंस इक्विपमेंट मैन्यूफैक्चरिंग में, यदि डिफेंस के लिए एक मुझे ट्रक चाहिए तो वो भी डिफेंस के रूल्स एवं रेगुलेशन के रिस्ट्रीक्शंस में पड़े हुए थे। हमने इन 100 दिन के अंदर-अंदर करीब-करीब 55 प्रतिशत ऐसी चीजों को उस सारी कानूनी व्यवस्था से बाहर निकाल दिया। हमने कहा कि आइए, ये सब आप जैसे सामान्यतः कोई भी चीज आप प्रोड्यूस करते हैं, आप कर सकते हैं और डिफेंस उसका परचेज करेगा। हमारा बहुत बड़ा मार्केट विदिन इंडिया है। डिफेंस मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर में अगर आप आते हैं, तो मुझे विश्वास है कि आप न सिर्फ भारत की आवश्यकताएं, बल्कि विश्व के अनेक छोटे-छोटे देश हैं, जिनकी रिकवायरमेंट को पूरा करने का, ऐसी मैन्यूफैक्चरिंग का काम आप हिंदुस्तान की धरती पर कर सकते हैं।

आपको जानकर के हैरानी होगी, भारत की पहचान साफ्टवेयर में है। हमारे टैलेंट, हमारे नौजवान साफ्टवेयर के क्षेत्र में बहुत बड़ी पहचान बनायी है। आपने हार्डवेयर में अपनी ताकत बनायी है। लेकिन साफ्टवेयर हार्डवेयर के बिना अधूरा है। हार्डवेयर साफ्टवेयर के बिना अधूरा है। भारत जापान के बिना अधूरा है, जापान भारत के बिना अधूरा है।

अगर हार्डवेयर इंडस्ट्री, भारत आपको निमंत्रण देता है। भारत के टैलेंट का साफ्टवेयर, आपकी बुद्धिमानी और मेहनत और बिजनेस एक्सीलेंस के कारण तैयार हुआ हार्डवेयर। अगर ये मेलजोल हो जाए, आप विश्व के अंदर बहुत बड़ा मिरेकल कर सकते हैं। मैंने देखा है कि स्मॉल स्केल इंडस्ट्रीज का एक बड़ा नेटवर्क ऐसा है, कि जो हार्डवेयर की दिशा में काम कर रहा है।

आज भारत का अपना इंपोर्ट इतना है। हमारा आज सबसे बड़ा इंपोर्ट पेट्रोलियम और आयल सेक्टर का है। हमारा एक अनुमान है कि 2020 में हमारा सबसे ज्यादा इंपोर्ट इलेक्ट्रानिक्स गुड्स का होने वाला है। आप कल्पना कर सकते हैं, कितना बड़ा मार्केट है। जापान का व्यापारी इंतजार करेगा क्या ? इतना बड़ा मार्केट आपका इंतजार कर रहा है। अगर आपका वहां लो कॉस्ट मैन्यूफैक्चरिंग होता है, आपको इफिशिएंट गवर्नेंस की अनुभूति होती है। मैं विश्वास से कहता हूं कि आपकी स्थिति बदल जाएगी।

आमतौर पर भारत की पहचान यह बन जाती है कि छोड़ो यार, वहां रेड टैप है। पता नहीं सरकारी कारोबार में कब गाड़ी चलेगी। मैं आपको विश्वास दिलाने आया हूं, आज भारत में रेड टैप नहीं, रेड कार्पेट है और रेड कार्पेट आपका इंतजार कर रही है।

हमने ईज आफ बिजनेस के लिए इतने सारे नए रेगुलेशन्स को लिबरल कर दिया है। शायद विश्व में इतनी तेज गति से लिबरलाइज मूड में, सारे हमारे पुराने रूल्स और रेगुलेशन्स में परिवर्तन लाने का किसी एक सरकार ने काम किया हो तो आज हिंदुस्तान की सरकार है। आखिरकार व्यापारी को, उद्योगकार को, इन्वेस्टर को एक सिक्युरिटी चाहिए। उसको प्रोपरली ग्रो करने के लिए एक इन्वायरमेंट चाहिए।

आज भारत, किसी को भी आकर के ग्रो करने के लिए प्रोपर इन्वायरमेंट के लिए, बहुत तेज गति से आगे चल रहा है। जहां तक इंफ्रास्ट्रक्चर का सवाल है, अब कभी, जो भी आज भारत में हमारे साथ काम करते हैं, और जिन्होंने गुजरात में मेरे साथ काम किया है, कई उद्योगकार हैं, जिन्होंने मेरे साथ काम किया है। जिस गति से हम इंफ्रास्ट्रक्चर को प्रोवाइड करने के लिए व्यवस्थाएं करते हैं, जिस गति से हम निर्णय करते हैं। मैं नहीं मानता हूं कि आज किसी भी उद्योगकार को उसके लिए कठिनाई हो सकती है।

आप कल्पना कर सकते हैं, हिंदुस्तान के आज 50 से अधिक छोटे शहर ऐसे हैं, जो मेट्रो रेल के लिए कतार में खड़े हैं। 50 शहरों में मेट्रो ट्रेन लगना, यानी इस फील्ड में काम करने वाले लोगों के लिए किसी एक देश में इतना बड़ा बिजनेस कभी सोचा है आपने ? इतना बड़ा बिजनेस अबेलेबल है। आप कितना सारा काम वहां पर कर सकते हैं। कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, और खास करके हम एस एम ईज को पोल्साहन देना चाहते हैं। स्मॉल स्केल इंडस्ट्रीज को हम इंवाइट करना चाहते हैं। ताकि जॉब क्रिएशन भी हो, मास स्केल पर प्रोडक्शन भी हो और एक ऐसी हेल्दी कंपीटिशन हो, जिसके कारण क्वालिटी

प्रोडक्शन पर बल मिले। इसलिए मैं आप सबसे आग्रह करने आया हूँ कि आप आइए। और कल भी मैंने एक जगह कहा था, 21वीं सदी एशिया की सदी है। मतलब क्या है ? इसका मतलब ये है कि विश्व की आर्थिक गतिविधि का केंद्र ये बनने वाला है।

विश्व की आर्थिक गतिविधि का केंद्र बनने वाला है तो कहां बनेगा ? मैं देख रहा हूँ, आज विश्व के लोगों को तीन बातों के लिए शायद कोई एक जगह पर ऑपरच्युनिटी हो, वैसी विश्व में कोई जगह नहीं है। एक स्थान पर तीन ऑपरच्युनिटी, एक - डेमोक्रेसी, दूसरा - डेमोग्राफी, तीसरा - डिमांड। ये एक ही जगह ऐसी है, जहां डेमोक्रेसी है, जहां पर डिमांड है और जहां पर 65 प्रतिशत पोपुलेशन बिलो 35 एज ग्रुप की है, डेमोग्राफिक डिवीजन। तीनों जगह एक स्थान पर हो, वैसी विश्व में एक भी जगह नहीं नहीं है और डेमोक्रेसी सेफ्टी, सिक्योरिटी एंड जस्टिस की गारंटी देती है।

आखिरकर बाहर के व्यक्ति को ये चीजें चाहिए, जो हम प्रोवाइड करते हैं। उसी प्रकार से, किसी भी उद्योगकार को, मैन्यूफैचरर को यंग ब्रेन चाहिए, यंग माइंड चाहिए, यंग पोपुलेशन चाहिए। उत्साह-उमंग से भरी हुई जवानी, अगर उसके हाथ में स्किल हो तो मिरेकल कर देती है। भारत आज विश्व का सबसे युवा देश है। और डिमांड, आप कल्पना कर सकते हैं, सवा सौ करोड़ देशवासी कितना बड़ा मार्केट है। अकेले हिंदुस्तान के मार्केट को आप सर्व करें तो भी आज जहां है, वहां से अनेक गुना आपकी कंपनी गो कर जाएगी। एक ऐसी सरकार आई है जो विकास के मुद्दे पर काम कर रही है। मैन्यूफैक्चरिंग सैक्टर को हम बढ़ावा देना चाहते हैं।

हमारे 100 दिन का रिकॉर्ड देखिए आप। सिर्फ 100 दिन में हमारा जो जीडीपी था, 4.4 - 4.5 - 4.6 पर लुढ़क रहा था। पिछले ढाई-तीन साल में जो हमने अचीव नहीं किया था, वह 100 दिन में कर दिया और 5.7 प्रतिशत का जीडीपी अचीव कर लिया। यह बताता है कि हमारी जो निर्णय हैं, हमारी जो पालिसीज हैं, 'ईज़ आफ बिजनेस' की हमारी जो सोच है, उसके कारण ये परिणाम मिल रहे हैं। इसलिए मैं आपको निमंत्रण देता हूँ कि आप आइए, हम सब मिल करके एशिया की पीस और प्रोग्रेस की गारंटी के लिए, जापान और भारत को कंधे से कंधा मिला कर के जितना आगे बढ़ने की जरूरत है। उसी प्रकार से हमने एशिया की समृद्धि के लिए, भारत जैसे देश की समृद्धि की दिशा में मिलकर के प्रयास करने की आवश्यकता है।

मैं आप सबको निमंत्रण देता हूँ। आप भारत आइए। अपना नसीब आजमाइए। अपना कौशल्य आजमाइए। भारत पूरी तरह आपका स्वागत करने के लिए तैयार है। मुझे दुबारा एक बार यहां आने का मौका मिला। बार-बार मैं जेट्रो में आता हूँ। मैं जब गुजरात में था तो एक जेट्रो का आफिस भी मेरे यहां मैंने खोल दिया था और हमारे कुछ मित्र हैं जो अब गुजराती बोलना भी सीख गए हैं।

मैं बारीक-बारीक चीजों का केयर करने वाला इंसान हूँ। मैं जानता हूँ कि 'ईज़ आफ बिजनेस' के लिए जितनी छोटी-छोटी चीजें, अगर दो चीजें आप भी ध्यान में लाएंगे तो हम तुरंत उसको करने के पक्ष में रहते हैं। इसलिए मैं आपको निमंत्रण देने आया हूँ। फिर से आपने मुझे बुलाया, इतनी बड़ी संख्या में आपका यहां आना, ये बताता है कि आपका हिंदुस्तान के प्रति कितना विश्वास बढ़ा है। आपकी हिंदुस्तान के प्रति कितनी रुचि बढ़ी है और हिंदुस्तान और जापान मिलकर के एक नया इतिहास आर्थिक विकास के क्षेत्र में निर्माण कर सकते हैं। इस पूरे विश्वास के साथ आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।

थैंक यू, थैंक यू वैरीमच।

अमित कुमार/ शिशिर चौरसिया/ तारा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

01-सितम्बर-2014 14:33 IST

**जापान चैम्बर्स आफ कामर्स एंड इंडस्ट्री (निप्पॉन किडनरेन) तथा जापान-भारत व्यापारिक सहयोग समिति द्वारा आयोजित
दोपहर भोज पर मुख्य वक्ता के रूप में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए भाषण का मूल पाठ**

अभी बड़े विस्तार से बताया गया कि मैं गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में कई वर्षों तक काम करके, अब भारत के प्रधानमंत्री के रूप में कार्यभार संभाला है। लेकिन इसमें ये सबसे बड़ी महत्वपूर्ण बात यह है कि गुजरात में काम करते समय मेरा सबसे अधिक संबंध जापान के इंडस्ट्रियल हाउस से हुआ, जापान के बिजनेस ग्रुप के साथ हुआ। पिछले 6-7 साल में शायद ही कोई ऐसा सप्ताह होगा, जब की जापान का डेलिगेशन गुजरात में न आया हो और इस संबंधों के कारण शासन में बैठे हुए लोगों का दृष्टिकोण कैसा होना चाहिए, इज़ आफ बिजनेस के लिए इनीशिएटिव कौन से होने चाहिए ? सिम्पल्लिफिकेशन ऑफ पालिसीज, इसके लिए कौन से कदम महत्वपूर्ण होते हैं, इन बातों को मैं सामान्य रूप से तो जानने लगा हूँ लेकिन साथ-साथ स्पेसिफिक जापान के लिए रिकवायरमेंट क्या है, उसको भी मैं समझने लगा हूँ।

मैं जब गुजरात का मुख्यमंत्री था, हमारे यहां गुजरात में गोल्फ क्या होता है, गोल्फ कोर्स क्या होता है, कुछ पता नहीं था। लेकिन, जब से जापान का डेलीगेशन आना हुआ, तो हमें लगा कि एक सरकार के नाते, बिजनेस के नाते, शायद मेरे एजेंडा में यह होगा नहीं। लेकिन एक बिजनेस के नाते जापान को फेसिलिटेट करना है तो और चीजों के साथ मुझे इसकी इस बारीकी का भी ध्यान रखना होगा और आज मैं गर्व से कह रहा हूँ कि मेरे गुजरात में वर्ल्ड क्लास गोल्फ कोर्सेस बना दिए हैं। ये इस बात का सबूत है कि एक प्रो-एक्टिव गवर्नमेंट, शासन और इन्वेस्टर के बीच में कैसा तालमेल होना चाहिए, कितनी बारीकी से देखना चाहिए, इसको मैं भली-भांति समझता हूँ।

मेरे लिए खुशी की यह भी बात है कि मैं पहले भी जापान आया हूँ। आप सबों ने मेरा स्वागत-सम्मान मुख्यमंत्री था, तब भी किया। जापान सरकार ने भी बहुत किया। जापान के लोगों के बीच में, मोदी कौन है और गुजरात में क्या करता है? इसकी बात मैंने जितनी बताई है, उससे ज्यादा जापान के जो लोग गुजरात से जुड़े हुए हैं, उन्होंने बताई है और इस कार्य में जो लोग गुजरात एक्सपेरीमेंट को जानते हैं, उनके मन में, जब मैं भारत का प्रधानमंत्री बना हूँ, तो आशाएं बहुत ज्यादा होना स्वाभाविक है। इतना ही नहीं, ज्यादा अपेक्षा भी हैं, और जल्दी से सारी बातें हो, यह भी अपेक्षा है।

मैं आपको आज विश्वास दिलाने आया हूँ कि पिछले 100 दिन के मेरे कार्यकाल को अगर देखा जाए। मैं राष्ट्रीय राजनीति में नया था, इतने बड़े पद के लिए, मैं उस प्रोसेस में कभी रहा नहीं था। मैं छोटे राज्य से आया। इन सारी मर्यादाओं के बावजूद भी 100 दिन के भीतर-भीतर जो इनीशिएटिव हमने लिए हैं, एक के बाद एक जो कदम हमने उठाए हैं, उसके परिणाम आज साफ नज़र आ रहे हैं। हम लोग जापान में जो मैनेजमेंट सिस्टम है, उसके रिफॉर्म में, 'करजाई सिस्टम' को बड़ा महत्व देते हैं। आपको जान कर के खुशी होगी, मैंने आते ही, मेरे पीएमओ को और इफीशिएंट बनाने के लिए, और प्रोडक्टिव बनाने के लिए, 'करजाई सिस्टम' से कंसल्ट करके उसे मैंने इंडक्ट किया है और आलरेडी मेरे यहां पिछले तीन महीने से भिन्न-भिन्न डिपार्टमेंट की ट्रेनिंग चल रही है। जापान का जो एफिसिएंसी लेवल है, वह एटलिस्ट शुरू में, मेरे पीएमओ में कैसे आए, उस पर मैं लगातार तीन महीने से काम कर रहा हूँ। आपकी एक टीम मेरे यहां काम कर रही है।

इससे आपको ध्यान में आएगा, कि गुड गवर्नेंस यह मेरी प्रोयोरिटी है। और जब मैं गुड गवर्नेंस कहता हूँ तब आखिरकर इज ऑफ बिजनेस के लिए पहली शुरुआत क्या होती है, यही तो होती है। कोई भी कंपनी आए तो उसको सिंगल विंडो क्लियरेंस की अपेक्षा रहती है। सिंगल विंडो क्लियरेंस अल्टीमेटली इज ए मैटर आफ गुड गवर्नेंस। इसलिए हमने गुड गवर्नेंस को बल दिया है। उसी प्रकार से प्रोसेस क्विक कैसे हो? ऑनलाइन प्रोसेस को बल कैसे मिले? गवर्नेंस में टेक्नोलोजी को इंपोर्टेंस कैसे बढ़े, उस पर हमने बल दिया है। कई ऐसे पेंडिंग सवाल, मुझे याद है जब मैं 2012 में यहां आया तो मेरे सामने कुछ बातें रखी गई थी। तब तो मेरे कार्यक्षेत्र में वह विषय नहीं था, तब भी मुझसे अपेक्षाएं की जाती थी, मोदी जी ये करिये। लेकिन वो मुझसे ज्यादा भारत सरकार से संबंधित थे। लेकिन शायद आप लोगों को कुछ अंदाजा होगा, इसी वर्ष 2012 से ही मुझे लिस्ट देना शुरू कर दिया था।

आप चाहते थे, एक बैंक की ओपनिंग हमारे यहां अहमदाबाद में हो जाए, मैंने आते ही पहला काम वो कर दिया। मैंने उस बैंक के लिए परमिशन दे दी। 'रियल अर्थ' के लिए कई दिनों से चर्चा चल रही थी। वह काम पूरा हो गया। ऐसे कई

डिसीजन एक के बाद एक। जापानीज बैंकों का भारत में और ब्रांचेज खोलने की अनुमति आल रेडी हमने दे दी। यानी एक के बाद एक निर्णय इतनी तेजी से हो रहे हैं। अल्टीमेटली मेरा ये ही इंप्रेशन है, क्योंकि बीइंग ए गुजराती, मेरे ब्लड में कामर्स है। जैसे ब्लड में मनी होता है और इसलिए मेरा इन चीजों को समझना स्वाभाविक है। मैं नहीं मानता हूँ कि बिजनेसमैन को बहुत ज्यादा कन्सेशन चाहिए। मैं ये समझता हूँ कि बिजनेसमैन को गो करने के लिए प्रोपर इन्वायरमेंट चाहिए। और इन्वायरमेंट प्रोवाइड करना, ये सिस्टम की जिम्मेवारी है, शासन की जिम्मेवारी है, पालिसीमेकर्स की जिम्मेवारी है। एक बार सही पालिसी मेकिंग का फ्रेमवर्क बन जाता है, तो चीजें अपने आप चलती हैं।

कभी-कभार डिले होने का एक कारण यह होता है कि हम नीचे के तबके के अधिकारियों पर चीजें छोड़ देते हैं। अगर हम पालिसी ड्रीवन स्टेट चलाते हैं, तो निर्णय करने में नीचे कोई भी झिझक नहीं रहती। छोटे से छोटा व्यक्ति भी आराम से डिसीजन ले सकता है। इसलिए हमने प्रायोरिटी दी है, पालिसी ड्रीवन स्टेट गवर्नेंस चलाने की। अगर पालिसी ड्रीवन स्टेट होता है तो डिसक्रिमीनेशन का स्कोप नहीं रहता है। पहले आप, पहले आप वाला मामला नहीं रहता है। और उसके कारण हर एक को समान न्याय मिलता है। हर एक को समान अवसर मिलता है और उस बात पर भी हमने बल दिया है।

अभी हमारी सरकार को तीन महीने हुए हैं। आप व्यापार जगत के लोग हैं तो आप जानते हैं ग्लोबल इकोनोमी, और ग्लोबल इकोनोमी का इंपैक्ट क्या होता है और किस नेशन की इकोनोमी कैसे चल रही है। पिछला एक दशक, हमारा कठिनाइयों से गुजरा है। मैं उसके विवाद में जाने के लिए इस फोरम का उपयोग नहीं करना चाहता हूँ। लेकिन पहले क्वार्टर में 5.7 प्रतिशत के ग्रोथ के साथ हमने एक बहुत बड़ा जम्प लगाया है। इसने एक बहुत बड़ा विश्वास पैदा किया है। क्योंकि हम 4.4- 4.5- 4.6 के आस-पास लुढ़कते रहते थे। और एक निराशा का माहौल था। इससे बहुत बड़ा बदलाव आता है।

आप जानते हैं, 'गो- नो गो', यह एक ऐसी स्थिति होती है जो किसी को भी डिसीजन लेने के लिए उलझन में डाल देती है। जब जनता का क्लियर कट मैसेज होता है, और एक खुशनसीबी है, जापान और भारत के बीच कि जापान में भी बहुत अरसे के बाद एक स्पष्ट बहुमत के साथ, पीपल्स मैसेज के साथ एक स्टेबल गवर्नमेंट आई है। लोअर हाउस, अपर हाउस दोनों में, एक स्टेबल गवर्नमेंट आई है। भारत में भी करीब 30 साल के बाद एक पार्टी की पूर्ण बहुमत की सरकार आई है। पूर्ण बहुमत की सरकार आने के कारण दो चीजें साफ बनती हैं। एक, हमारी अकाउंटिबिलिटी बहुत ज्यादा बढ़ जाती है। हमारी रिस्पांसिबिलिटी और ज्यादा बढ़ जाती है। ये दो चीजें ऐसी हैं जो हमारे काम करने के की जिम्मेवारी को भी बढ़ाती हैं प्रेरणा भी देती है, गति भी देती है। ये जो पोलिटिकल स्टेबिलिटी की सिचुएशन दोनों कंट्री में खड़ी हुई है, वो आगे वाले दिनों में बहुत बड़ी उपकारक होने वाली है, ये मैं साफ मानता हूँ।

मैं और एक विषय पर जाना चाहता हूँ। आप जानते हैं, भारत दुनिया का सबसे युवा देश है। 65 परसेंट आफ पोपुलेशन बिलो थर्टी एज ग्रुप की है। 2020 में पूरे विश्व को जो वर्क फोर्स की जरूरत है, अभी से मैपिंग करके, ग्लोबल वर्क फोर्स की जो रिक्वायरमेंट है, उसकी पूर्ति करने के लिए हम स्किल डेवलपमेंट पे बल देना चाहते हैं, ताकि 2020 में हम ग्लोबल वर्क फोर्स रिक्वायरमेंट को मीट करने में भारत बहुत बड़ी भूमिका निभा सकता है। लेकिन हम स्किल डेवलपमेंट जापान के तर्ज पर करना चाहते हैं, जहां क्वालिटी, जीरो डिफेक्ट, इफीशिएंसी, डिसिप्लिन, इन सारे विषयों में हम कोई कभी न बरतें। मैं मानता हूँ, जापान हमें इसमें बहुत बड़ी मदद कर सकता है। मैं जापान के गवर्नमेंट के जिन लोगों से मिलता हूँ, मैं उनसे बात कर रहा हूँ, मुझे उस स्किल डेवलपमेंट के लेवल पे जाना है जो ग्लोबल रिक्वायरमेंट के लेवल पे करें। हम ग्लोबल रिक्वायरमेंट की मैपिंग भी करना चाहते हैं और एकार्डिंग टू देट, हम लोग हमारे यहां स्किल डेवलपमेंट पे फोकस करना चाहते हैं।

उसी प्रकार से, जापान के साथ मिल करके हम रिसर्च के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं। मानव स्वभाव ऐसा है, कि निरंतर रिसर्च अनिवार्य होती है। देयर इज नो इंड ऑफ दि रोड, रिसर्च के क्षेत्र में। और ये अगर करना है तो दुनिया में इस प्रकार की जो इन्टेलक्चुअल प्रॉपर्टी है, उसे आगे बढ़ाने में कौन कितना मदद कर सकता है। भारत इस प्रवाह में जुड़ना चाहता है। वहां भी एक बहुत बड़ा स्कोप है। 125 करोड़ की जनसंख्या। वहां भी एक अर्ज पैदा हुई है। वे भी अपनी क्वालिटी ऑफ लाइफ में चेंज चाहते हैं। जब 125 करोड़ लोग क्वालिटी ऑफ लाइफ में चेंज चाहते हैं तो ये अर्ज भीतर से उठती है तो हम कल्पना कर सकते हैं कि रिक्वायरमेंट भी कितनी बड़ी होगी।

अगर हम एक एनर्जी सेक्टर ले लें, आज क्लीन एनर्जी हमारी सबसे बड़ी रिक्वायरमेंट है। क्योंकि हम कोई हाइड्रो-कार्बन रिच कंट्री नहीं हैं। हम प्रकृति से, एक्सप्लाइडेशन ऑफ नेचर में विश्वास नहीं करते हैं। हम एन्वायरमेंट फ्रेंडली डेवलपमेंट में विश्वास करते हैं। और इसीलिए हमारे लिए बहुत जरूरी है कि हम क्लीन एनर्जी के क्षेत्र में आगे बढ़ें। और उसमें जापान से हम जितना सहयोग कर सकते, जितना जापान का हमें सहयोग मिलेगा, हम ग्लोबली बहुत बड़ी सेवा कर सकते हैं। क्योंकि सवा सौ करोड़ देशवासियों का एनर्जी कंजम्पशन की तुलना में, उनकी क्लीन एनर्जी से ग्लोबल वार्मिंग को बचाने में भी उनकी मदद होना बहुत स्वाभाविक है।

हम इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में, अभी बजट में हमने काफी इनिशिएटिव लिए हैं। रेलवे में हमने 100 पर्सेंट एफडीआई के लिए बहुत हिम्मत का निर्णय किया है। डिफेंस में हमने 49 पर्सेंट का बहुत बड़ा महत्वपूर्ण निर्णय किया है। इन्फ्रास्ट्रक्चर में हमने 100 पर्सेंट एफडीआई की बात कही है और इसके लिए जो भी आवश्यक है उन आवश्यक कानूनी व्यवस्थाओं में परिवर्तन लाना होगा। नियमों में परिवर्तन लाना होगा। एक के बाद एक हम कर रहे हैं। मैं मानता हूँ कि इसका लाभ भी आने वाले दिनों में मिलने वाला है।

मैं चाहता हूँ अगर आप गुजरात एक्सपीरियंस को अपना एक पैरामीटर मानते हैं तो मैं आपसे आग्रह करूंगा कि आने वाले दिनों में भारत में भी आपको वही रिस्पान्स, वही सुविधाएं, वही गति और वही परिणामकारी परिस्थितियां मिलेंगी। ये मैं जापान के सभी उद्योग जगत के मित्रों को विश्वास दिलाने के लिए आया हूँ। मैं यह भी मानता हूँ कि भारत और जापान में आर्थिक समन्वय का बनना, वो क्या हमारी बैलेंस शीट में इजाफा करने के लिए है? क्या हमारा बैंक बैलेंस बढ़े, इसके लिए है? या हमारी कंपनी का बड़ा वोल्यूम है इसलिए हमारी ऊंचाई बढ़े, ये है? मैं मानता हूँ कि भारत और जापान का संबंध इससे भी कहीं ज्यादा और है।

इस बात में ना आप में से किसी को शंका है ना मुझे कोई शक है और ना ही ग्लोबल कम्युनिटी को शक है कि 21वीं सदी एशिया की सदी है। ये सारी दुनिया मानती है। उसमें कोई दुविधा नहीं है। 21वीं सदी एशिया की है ये सारी दुनिया मानती है। लेकिन मेरे मन में सवाल दूसरा है और सवाल ये है कि 21वीं सदी एशिया की हो, लेकिन 21वीं सदी कैसी हो, किस की हो इसको तो जवाब तो मिल चुका है, कैसी हो इसका जवाब हम लोगों को देना है। मैं यह मानता हूँ कि 21वीं सदी कैसी हो, ये उस बात पर निर्भर करता है कि भारत और जापान के संबंध कितने गहरे बनते हैं, कितने प्रोग्रेसिव हैं। पीस एंड प्रोग्रेस के लिए कितना कमिटमेंट है और भारत और जापान के संबंध पहले एशिया पर और बाद में ग्लोबली किस पर प्रकार का इम्पेक्ट क्रिएट करते हैं, उस पर निर्भर करता है। इसलिए 21वीं सदी की शांति के लिए, 21वीं सदी की प्रगति के लिए, 21वीं सदी के जन सामान्य मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, भारत और जापान की बहुत बड़ी जिम्मेवारी है और किसी न किसी कारण से उन जिम्मेवारियों को निभाने के लिए जन सामान्य ने बहुत बड़ा निर्णय किया है, पॉलिटिकल स्टेबिलिटी का। अब दायित्व उन चुनी हुई सरकारों का है। उन दो देशों के पालिसी मेकर्स का है, ओपीनियन मेकर्स का है। इंडस्ट्रियल और फाइनेंशियल वर्ल्ड के लीडर्स का है। और ये यदि हम कर पाते हैं तो हम आने वाले दिनों में किस प्रकार से विश्व को जाना है तो उसका रास्ता तय कर सकते हैं।

दुनिया दो धाराओं में बंटी हुई है। एक, विस्तारवाद की धारा है और दूसरी विकासवाद की धारा है। हमें तय करना है विश्व को विस्तारवाद के चंगुल में फंसने देना है या विश्व को विकासवाद के मार्ग पर जा करके, नई ऊंचाइयों पर जा करके नई ऊंचाइयों को पाने के अवसर पैदा करना है। जो बुद्ध के रास्ते पर चलते हैं जो विकासवाद में विश्वास करते हैं, वह शांति और प्रगति की गारंटी लेकर के आते हैं। लेकिन आज हम चारों तरफ देख रहे हैं कि 18वीं सदी की जो स्थिति थी, वो विस्तारवाद नजर आ रहा है। किसी देश में एन्क्रोचमेंट करना, कहीं समुद्र में घुस जाना, कभी किसी देश के अंदर जाकर कब्जा करना। ये विस्तारवाद कभी भी मानव जाति का कल्याण 21वीं सदी में नहीं कर सकता है। विकासवाद ही अनिवार्य है और मैं मानता हूँ कि 21वीं सदी में विश्व का नेतृत्व यदि एशिया को करना है तो भारत और जापान ने मिलकर विकासवाद की गरिमा को और ऊंचाई पर ले जाना पड़ेगा। अगर इसको करना है तो मैं चाहूंगा कि इन्डस्ट्रियल वर्ल्ड हो, फाइनेंशियल वर्ल्ड हो, बिजनेस सर्कल हो, हमारे इंटरलेक्चुअल फील्ड के लोग हों। हम सबको मिलकर करें, भारत और जापान की एक वैश्विक जिम्मेदारी है। ये सिर्फ भारत की भलाई के लिए कुछ करे या जापान की भलाई के लिए कुछ करें, इस कंपनी की भलाई के लिए कुछ करे या उस कंपनी की भलाई के लिए कुछ करें, यहां तक का सीमित दायरा मिट चुका है, हम उससे बड़ी जिम्मेदारियों के साथ जुड़े हुए हैं।

मुझे विश्वास है कि मैं ऐसे महत्वपूर्ण लोगों के बीच में खड़ा हूँ, जो एक प्रकार से, दुनिया की इकोनोमी में बहुत बड़ा ड्राइविंग फोर्स, इस कमरे में बैठे हैं, जो विश्व की इकोनोमी को दिशा देने वाले लोग हैं। विश्व की इकोनोमी में प्रभुत्व पैदा करने वाले लोग मेरे सामने बैठे हैं। इतने बड़े सामर्थवान लोगों के बीच में मैं आज ऐसी बात कर रहा हूँ, जो मानव कल्याण के लिए है, विश्व शांति के लिए है, विश्व के गरीबों की प्रगति के लिए है। और उस एक महान दायित्व को पूर्ण करने के लिए भारत अपनी भूमिका निभाना चाहता है। नई सरकार आवश्यक सभी रिफार्म करते हुए आगे बढ़ना चाहता है।

मैं जापान के उद्योगकार मित्रों से एक और भी बात बताना चाहता हूँ। हमने तय किया है डायरेक्टली पीएमओ के अंदर में, एक जापान प्लस, इस भूमिका से एक स्पेशियल मैनेजमेंट टीम मैं क्रिएट करने जा रहा हूँ। जो एबसेल्यूटली जापान को फेसिलिटेट करने के लिए डेडिकेटेड होगी और उसके कारण उनकी सुविधा बढ़ेगी। और एट दि सेम टाइम, हमारे यहां जो इन्डस्ट्रियल कामों को देखने वाली जो टीम है, उसके साथ हमारी टीम में, मैं जापान जो दो लोगों को पसंद करे उस टीम में मैं जोड़ना चाहता हूँ। जो परमानेंट उसके साथ बैठेंगे, जो आपकी बात को बहुत आसानी से समझ पायेंगे और हमारे

निर्णय प्रक्रिया के हिस्से होंगे। ये एक ऐसी सुविधा होगी जिसके कारण 'ईज़ आफ बिजनेस' है, 'ईज़ फोर जापान' भी हो जाएगा। इस प्रकार से एक स्पेशल इनोसिएटिव भी लेने का हमने निर्णय लिया है। मुझे आप सबके बीच आने का अवसर मिला, आपने समय निकाला। आपका बहुत-बहुत आभारी हूँ।

भारत से मेरे साथ एक बहुत ही बड़ा डेलीगेशन आया है। आप लोग तो परिचित होंगे, कोई ना कोई से परिचित होगा, लेकिन सब लोग सबसे परिचित नहीं होंगे। मैं कह सकता हूँ कि हिन्दुस्तान का इन्डस्ट्रियल वर्ल्ड का जो मेरा 'हू इज हू' है, वो आज यहां इस कमरे में हैं। मैं चाहूंगा कि आप लोग उनसे बाद में मिलना चाहेंगे तो मैं एक बार उनसे प्रार्थना करूंगा कि अगर हमारे लोग एक बार अपनी जगह पर खड़े हो जायें, भारत से आये हुए मेरे सब साथी। तो और लोगों को ध्यान में रहेगा ताकि हाथ मिलाना उनको बात करना उनको सबको सुविधा रहेगी। ये बहुत ही हैवीवेट, मेरे देश की टीम है। मुझे भी कभी मिलना है, तो मुझे भी उनसे समय लेना पड़े, इतने बड़े लोग हैं।

मैं इनका भी आभारी हूँ कि मेरे साथ वो आये हैं और भारत की प्रगति के एक महत्वपूर्ण वो हिस्से हैं। वी आर पार्टनर। हम सरकार और वो अलग ऐसी भूमिका हमें मंजूर नहीं। हम सभी एक पार्टनर हैं। पार्टनर रूप से आगे बढ़ा रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि जापान और भारत पार्टनर बने। हम मिलकर एशिया के लिए और एशिया के माध्यम से विश्व के लिए विकास के मार्ग पर आगे बढ़ें।

इसी अपेक्षा के साथ फिर आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

अमित कुमार/ शिशिर चौरसिया

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

09-अक्टूबर-2014 17:10 IST

इंदौर में "इंवेस्ट मध्य प्रदेश: ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट 2014" के उद्घाटन पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के भाषण का मूल पाठ

भाइयों और बहनों,

ये ऐसा कार्यक्रम है, जिसमें मुझे पूरा समय रुकना चाहिए। दो दिन हो तो दो दिन रुकना चाहिए। इस बार मैं वो नहीं कर पाया हूँ, भविष्य में जरूर प्रयास करूंगा। क्योंकि मैं भली-भांति जानता हूँ कि देश की ताकत राज्यों में निहित होती है और जो राज्यों की ताकत समझता है वही देश को ताकतवर बना सकता है। भारत को अगर आगे बढ़ाना है तो राज्यों का आगे बढ़ना बहुत आवश्यक है।

भारत एक Pillar पर ऊंचाई प्राप्त नहीं कर सकता है। हर मजबूत राज्य के Pillars ultimately देश को ऊपर ले जाते हैं। केंद्र सरकार का ये दायित्व बनता है कि सभी राज्यों को विकास के लिए प्रोत्साहित करे। जहां जरूरत पड़े, वहां पूरी शक्ति से उनके साथ जुड़े रहें, और तब जाकर के हम विकास की नई ऊंचाईयों को प्राप्त कर पाएंगे। मैंने प्रारंभ से कहा है कि देश के विकास के लिए मैं टीम इंडिया, इस मंत्र को लेकर के आगे काम करना चाहता हूँ। और मैं जब टीम इंडिया की बात करता हूँ, तब प्रधानमंत्री और सभी मुख्यमंत्री एक ऐसी टीम है जो टीम कंधे से कंधा मिला कर के काम करे तो बहुत से कामों में तेजी आ सकती है। विकास की नई ऊंचाईयों को प्राप्त किया जा सकता है।

मुझे मुख्यमंत्री के नाते काफी अनुभव रहा है। और इसलिए केंद्र और राज्य के परस्पर सहयोग के रिश्ते कितनी ताकत दे सकते हैं, इसका मुझे पूरा-पूरा अंदाज है और स्वअनुभव से अंदाज है। अगर सहयोग न हो तो कितनी तकलीफ होती है, इसका भी पूरा अंदाज है। मुझे अकेले को नहीं, शिवराज जी को भी पता है। उन्होंने दस साल कैसे बिताये हैं, मुझे मालूम है। इसलिए भारत जैसे देश को आगे बढ़ाना है, तो केंद्र और राज्य के रिश्ते 36 तो कतई नहीं हो सकते। और होना ही नहीं चाहिए। 36 का आंकड़ा कतई उपयोगी नहीं होता। केंद्र और राज्य प्रतिस्पर्धी नहीं हैं। केंद्र और राज्य दुश्मनी भी नहीं करते। केंद्र और राज्य एक-दूसरे के पूरक हैं। ये मैसेज, हिन्दुस्तान में जो काम करना चाहते हैं उन सबको होना चाहिए। आप किसी भी राज्य में जाइए, वह राज्य अगर आपके साथ खड़ा है, तो आप लिख के रखिए, केंद्र आपके साथ खड़ा है। कोई चिंता करने की जरूरत नहीं है।

जैसे मैं कहता हूँ कि 36 का आंकड़ा नहीं होना चाहिए, वैसे, सिर्फ आस-पास होने से भी बात बनती नहीं है कि केंद्र और राज्य पास-पास खड़े हैं। पास-पास खड़े रहते हैं तो $1+1 = 2$ होता है। 36 से बाहर निकल गए, अच्छी बात है। लेकिन यहां पर अटकने से काम नहीं होगा। पास-पास हैं तो $1+1 = 2$ होता है। मुझे तो इससे भी 2 कदम आगे जाना है। पास-पास नहीं, साथ-साथ होना है। और जब साथ-साथ होते हैं तो एक से मिलकर एक 11 हो जाता है। केंद्र और राज्य, इनकी शक्ति इतनी गुना बढ़ जाती है। इसलिए ये जो extra energy है, उसको लेकर के मुझे आगे बढ़ना है।

हम पहले जब Mathematics पढ़ते थे तो पढ़ते थे $(A + B)^2$ और जब उसका रिजल्ट निकालते थे तो $A^2 + B^2 + 2AB$, ऐसा उसका रिजल्ट निकालते थे। ये टू एबी कहाँ से आया ? ये टू एबी है, जुड़ने की extra energy होता है। जब वो संगठन का ब्रेकेट लग जाता है, केंद्र और राज्य का मिलन हो जाता है, $(A + B)^2$ हो जाता है, $A^2 + B^2 + 2AB$ । ये जो "2AB" निकलता है, वह extra energy बनता है। इस extra energy को लेकर के हम देश को आगे बढ़ाना चाहते हैं।

आप कल्पना कर सकते हैं, अगर सही नेतृत्व हो, नीति स्पष्ट हो, नियत साफ हो, इरादे नेक हो, दिशा निर्धारित हो, मकसद पाने का इरादा हो तो बीमारू राज्य भी प्रगतिशील राज्य बन सकता है। इसका उत्तम उदाहरण शिवराज जी, उनकी टीम और मध्य प्रदेश ने दिखाया है।

पूरे विश्व को पता होना चाहिए, कि जो राज्य 2 प्रतिशत से भी कम Growth Rate से गुजरता था वो दस साल में 9 प्रतिशत Growth Rate पर पहुंच गया। विश्व ये भाषा समझता है और विश्व को हमें समझाना चाहिए और भारत सरकार ने मध्यप्रदेश का ढोल पीटना चाहिए। दुनिया जाने कि भई कैसे बदलाव आ रहा है। Infrastructure का क्षेत्र.. आप कल्पना

कर सकते हैं कि कितने कम समय में Irrigation Land को चार गुणा Cover कर दिया जाए.. जो काम इतनी तेजी से हो सकता है और Agriculture Sector का Infrastructure, ये विकास की एक बहुत बड़ी, महत्वपूर्ण धरोहर बनता है। ये काम यहां हुआ।

बिजली Surplus state बना दिया गया, रोड का नेटवर्क खड़ा कर दिया गया और Land Locked State होने के बावजूद भी। थोड़ी बहुत पहले पहचान थी तो Agriculture की पहचान थी, उसको Manufacturing State में Convert करने की दिशा में एक बीड़ा उठाया और इसके लिए मध्यप्रदेश बहुत-बहुत अभिनंदन का अधिकारी है। भारत के सामने एक प्रमुख लक्ष्य है, और वो प्रमुख लक्ष्य है रोजगार उपलब्ध कराना। हमारी पहली प्राथमिकता विकास में ये है कि हम सर्वाधिक रोजगार कैसे उपलब्ध करा सकें। ये देश नौजवानों का देश है, उनके हाथ में अगर रोजगार के अवसर होंगे तो केंद्र और राज्य मिलकर के जितनी ताकत से आगे बढ़ते हैं, अगर इन नौजवानों की भुजाएं हाथ लग जाएं, तो शायद ऊंचाईयों को पार करने में हमें देर नहीं लगेगी, ये मेरा विश्वास है।

इसलिए हम.. चाहे Agriculture Sector हो। Manufacturing Sector हो, चाहे Service Sector हो। तीनों को समान रूप से बल दे करके अधिकतम रोजगार उपलब्ध हो, उस दिशा में हम काम को आगे बढ़ाना चाहते हैं। जब हम Make in India कहते हैं, तो हम विश्व को विश्वास दिलाना चाहते हैं कि अपार संभावनाएं पड़ी हैं। कृपा करके भारत को सिर्फ बाज़ार मत समझिए। विश्व का ध्यान भारत पर इसलिए गया कि उनको लगा सवा सौ करोड़ देशवासियों का Market है। चलो माल Dump करो! बेचो! और मुनाफा कमाओ! मैं विश्व को बढ़ता हूँ कि यहां तक सीमित मत रहिए। अगर भारत विकास नहीं करेगा तो उसका Purchasing Power नहीं बढ़ेगा। अगर भारत का Purchasing Power नहीं बढ़ेगा, हर भारतीय का Purchasing Power नहीं बढ़ेगा तो आपका ये बाज़ार के रूप में देखने का सपना अधूरा रहेगा। इसलिए आपका भी भला इसमें है, इसलिए आपका भी भला इसमें है, कि यहां पूंजी निवेश कीजिए, यहां के लोगों की खरीद शक्ति बढ़े, तो फिर वो यहीं आपका ही उत्पादन किया माल लेने वाले हैं।

इसलिए Make In India ये Concept भिन्न-भिन्न Situation वाला है, आपके लिए, कोई भी दुनिया का Manufacturer है, उसे क्या चाहिए? उसे Low Cost Production चाहिए, उसे Skilled man Power चाहिए। उसे Zero man days loss चाहिए। उसको Effective Governance चाहिए। उसको Proper Infrastructure चाहिए। मैं विश्वास से कहता हूँ कि मध्य प्रदेश की धरती में, मध्यप्रदेश की सरकार में ये सामर्थ्य है, ये सारी बातें आपको देने का। ये आपके लिए एक प्रकार से सुनहरा अवसर है। यह सुनहरा अवसर है, यह मौका आपको गंवाना नहीं चाहिए।

मध्यप्रदेश के पास एक अनमोल संपत्ति है, जिसकी तरफ बहुत कम लोगों को ध्यान है। यह भारत का दूसरा विशाल state है। बहुत जमीन है इस राज्य के पास। बहुत जमीन है। शायद हिन्दुस्तान में जमीन के मालिकाना में इतना सुखी राज्य कोई नहीं होगा देश में। और जनसंख्या की दृष्टि से ये दुनिया के बड़े-बड़े देशों से भी बड़ा है। और इसलिए इतनी क्षमता वाला ये राज्य आने वाले दिनों में विकास के लिए कितनी अनुकूलता पैदा कर सकता है। Manufacturing sector में भी हम उस Manufacture को Priority दें, जिसमें export की पूरी संभावना है।

भले हम छोटे-छोटे, छोटे-छोटे उद्योगों का नेटवर्क बनाएं, लेकिन वो कंपोनेंट भी एक्सपोर्ट करने का अवसर हो। भले ही असेम्बलिंग दुनियाभर में कहीं भी हो रहा हो। हम उस दिशा में कैसे आगे बढ़ सकते हैं। हम छोटे-छोटे उद्योगों के जाल के साथ बड़े उद्योगों को सहायता करने वाला नेटवर्क कैसे तैयार करें, Inter dependence व्यवस्था को हम कैसे Promote करें ?

मैं मानता हूँ कि मध्य प्रदेश ने उस दिशा में ध्यान दिया है और यहां SME Sector का सम्मेलन बुलाया था। मध्यप्रदेश के लोग थे, लेकिन उनको प्रोत्साहन देना, उनको मदद देना और ये जो उद्योगकार आए हैं बड़े-बड़े, उनका ध्यान जाए कि छोटे-छोटे component बन रहे हैं, उनके लिए उनके पास भी opportunity है। ये दोनों की Inter dependent व्यवस्था अगर खड़ी हो जाती है, तो छोटे-छोटे उद्योगकारों के लिए भी एक बहुत बड़ी Market Chain खड़ी हो सकती है, और उसका फायदा मिल सकता है।

उसी प्रकार से मध्य प्रदेश एक ऐसा प्रदेश है, कि जिसने Agriculture sector में एक Infrastructure खड़ा किया। मध्य प्रदेश की जमीन उर्वर जमीन है। यह हमारा मालवा क्षेत्र का गेहूं, उसको लेने के लिए लोग कतार लगाते हैं। शायद, मालवा क्षेत्र का गेहूं, इतना sweet गेहूं, शायद हिन्दुस्तान के किसी कोने में होता हो। लेकिन Agriculture में सिर्फ किसान की मेहनत से यह economy drive करेगी, ऐसा नहीं होगा। समय की मांग है कि हम Agriculture sector में value addition के लिए मध्य प्रदेश को महत्व कैसे दें। सोयाबीन में मध्य प्रदेश ने अपना नाम बनाया है। ऐसे कई क्षेत्र हैं।

हम मध्य प्रदेश में special विचार करके Agriculture sector में value addition करें और उसके कारण हमारे किसानों की आय कितनी बढ़ेगी, इसका अंदाज कर सकते हैं। Agriculture sector का Infrastructure, चाहे cold storage हो, warehousing हो, Transportation के लिए vehicle की आवश्यकता हो। अब हमारे यहां सोयाबीन, हमारा सोयाबीन विदेश जाता है, अगर Port तक उसको Infrastructure मिलेगा। यहां के हमारे सोयाबीन, मैं मानता हूं कि दुनिया के बाजार में जाने में उसको बहुत सुविधा रहेगी। तो हमारे Agriculture Sector को Proper Market मिले, आपको जानकर बहुत आश्चर्य होगा और मुझे हैरानी है कि हमारे शिवराज जी भी उस बात का फायदा नहीं उठाते। उठाते होंगे तो मुझे ध्यान में नहीं है।

यहां बैठे हुए कई लोगों के लिए वह खबर शायद surprise दूंगा मैं आज। ये एक ऐसा प्रदेश है, जहां पर हिन्दुस्तान में कुल जो Organic farming होता है, Organic farming का उत्पादन है, अकेला मध्य प्रदेश 40% Contribution कर रहा है Organic farming में। ये-ये-ये किसी का ध्यान नहीं है इस बात पर। Organic Agro Product का आज World Market है, Global Market पड़ा हुआ है। और एक राज्य हिन्दुस्तान के Total Agro Market का organic Agro Market का 40% देता है, मतलब यहां के किसानों ने पूरी मानव जाति की बहुत बड़ी सेवा करने का काम किया है। और Holistic Health Care का दुनिया में जो प्रवाह चल रहा है, उसमें अपनी जगह बनाने का मौका दिया है। यह हम सबका दायित्व बनता है, कि हम उसको अवसर दें। हम उसको अवसर दें।

ये हम सबका दायित्व बनता है, कि हम उसको अवसर दें। यानी Agriculture Sector के साथ मध्यप्रदेश .. और भारत के अंदर, जैसे Global Market का Special benefit होता है, उसी प्रकार से, भारत जैसे Market के लिए मध्यप्रदेश का ऐसा Location Advantage है कि अगर हम Agro-Product में Value Addition करते हैं, पूरे हिन्दुस्तान में चारों दिशा में, बहुत बड़ा Easy Reach Out करने की, आपके लिए Opportunity है और मैं चाहता हूं Investors को.. इस दिशा में काम करें।

कोई सरकार तेज गति से जब चलती है, तो कितना उत्तम परिणाम दे सकती है। मोदी ने Make In India की बात अभी-अभी कही। बजट के अंदर केंद्र सरकार ने Defence के लिए बात कही। लोगों को लगता है, ठीक है मोदी ने कह दिया। बजट में बोल दिया! लेकिन बात आगे कैसे बढ़ती है ? मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य बना, जिसमें Defence manufacturing की policy बना दी और जैसे ही भारत सरकार ने योजना बनाई, उसको तुरंत अपने लिए काम में लगा देने के लिए उन्होंने initiative लिया। ये जो है, विकास के लिए यही तौर तरीके हैं जो Ultimately काम करते हैं। उन्होंने तुरंत अपने राज्य के Resources, अपने राज्य के कानून, अपने राज्य की स्थिति और.. Defence Manufacturing Sector के लिए परंपरागत रूप से जबलपुर, ग्वालियर.. उसमें अपनी एक जगह थी। कालक्रम में सब नष्ट हो गया। या तो हालत बड़ी खस्ता हो गई..। लेकिन, यहां पर Natural Tendency पड़ी हुई है, जबलपुर और ग्वालियर में। जबलपुर, ग्वालियर की जो Natural Tendency है और शिवराज सिंह की सरकार ने जो Defence Policy लाए हैं, Defence Manufacturing Sector के लिए Policy लाए हैं और भारत सरकार का जो Initiative है.. मैं मानता हूं, भारत को Defence के Sector में Self Sufficient बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम मध्य प्रदेश ने उठाया है। मैं सभी क्षेत्र के Investors को कहता हूं कि ये देश की बहुत बड़ी सेवा का क्षेत्र खुल रहा है। और ये वो Manufacturing है जो भारत के Import को कम करेगा।

आज! आज हम हर छोटी चीज़ विदेशों से लाते हैं। अश्रु गैस के सेल भी बाहर से आता है। रोना भी बाहर से लाना पड़ता है जी! ये बदलना है और हमें कोई क्यों रूलाए? रोना होगा तो हम खुद रो लेंगे।

लेकिन एक अच्छा काम उन्होंने किया: Digital India. हमने बजट में घोषणा की, उसके बाद मैंने Digital India का एक Campaign को Organize किया, व्यवस्था बनाई। लेकिन अभी वहां हमारा काम, अभी-अभी तो हम कर रहे हैं। और मध्यप्रदेश Digital India को धरती पर उतारने के लिए दो Electronic Estate को बनाने का शिलान्यास कर देता है। अब देखिए, केंद्र और राज्य मिलकर के उस योजना के प्रकाश में, इस Vision के प्रकाश में, योजनाओं को Implement करने का काम की ओर तेजी से हो रहा है।

प्रधानमंत्री जन-धन योजना बनी। भारत सरकार ने प्रधानमंत्री जन-धन योजना लांच की। बैंकों को लगाया। लेकिन मध्यप्रदेश ने इसे अपना बना दिया। इतने कम समय में 36 लाख लोगों के बैंक एकाउंट खोलने का काम मध्यप्रदेश ने कर दिया। और इतना ही नहीं, ये भारत सरकार से भी दो कदम आगे गए। उन्होंने परिवार को एक यूनिट बनाया, बैंक एकाउंट के साथ और Government Benefit Scheme को परिवार के साथ जोड़कर के Transfer करने की एक Perfect Planning करके रख दिया। यानी भारत सरकार का कोई Vision हो, उसके साथ राज्य सरकार immediately उसको पकड़कर के आगे बढ़ती है, तो कितना फायदा होता है। मैं यहां मध्यप्रदेश की एक-एक घटनाओं को बारीकी से देखता हूं

और उसके आधार पर मैं कह रहा हूँ, और मैं कोई कागज़ देखकर नहीं बोल रहा हूँ।

और चुनाव जीतने के बाद मैं मध्यप्रदेश पहली बार आया हूँ। जानकारी के लिए खुद जाना नहीं पड़ता है। जानकारियाँ रखना एक जिम्मेवारी होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर केंद्र सरकार को हर राज्य के सामर्थ्य का पता हो, केंद्र को अगर राज्यों Priorities का पता हो, केंद्र को राज्य के Resources का पता हो, और किन चीजों में जुड़ने से देश का भला होगा, इसका Perfect Planning हो, तो मैं मानता हूँ कि हम बहुत तेज गति से आगे बढ़ सकते हैं और आज के इस event से ये बात साबित हो जाती है कि काम कैसे आगे बढ़ाया जा सकता है।

जैसा मैंने पहले कहा, मैं एक और विषय सभी राज्यों से कहना चाहता हूँ - सिर्फ मध्य प्रदेश से मैं कह रहा हूँ, ऐसा नहीं है। अब समय बदल चुका है।

कोई देश, राज्य तो छोड़िए, कोई देश अकेला अपनी दुनिया लेकर अपने ही सपनों में नहीं जी सकता। उसको global prospective में ही अपनी जगह बनानी पड़ती है। हम एक global era से गुजर रहे हैं, global economy का impact है। पहले मुंबई का शेयर बाजार कुछ करता था तो 24 घंटे के बाद impact महसूस होता था। आज New York के Market में कुछ होता है तो दो सेकंड के बाद ही हिन्दुस्तान के Market में Impact होता है।

जगत बहुत बदल चुका है। और इसलिए हमें भी अपने को इस रूप में सज्य करना चाहिए। और हम राज्यों से चाहता हूँ कि हम अपना एक Talent Pool बनायें। Global Talent Pool बनायें। एक Global Talent Pool की मेरी कल्पना ये है कि आपके राज्य के नागरिक दुनिया में कहीं-कहीं बसे हुए हैं। अगर हर गांव में पूछोगे कि आपके गांव से कितने लोग विदेश में हैं, तो गांव वाले बता देंगे कि 5 लड़के हमारे विदेश में हैं। कोई 25 साल पहले गया होगा, कोई 50 साल पहले गया होगा, उनको ढूँढना चाहिए। एक Global Networking करके Global Talent Pool बनाना चाहिए। और आज दुनिया में बैठे भारतीय भी भारत के लिए कुछ करना चाहते हैं। Dollar और Pound बाद की बात है। उनका experience, उनकी Talent, उनकी discipline ये हमें बहुत काम आ सकती है। उसके विषय में initiative लेना चाहिए और आने वाले दिनों में देखिए, इसका हमें फायदा मिल सकता है। आज विश्वभर में फैला हुआ हमारा जो Intellectual Property है, हमारा जो ये Talent है, ये Talent भारत के लिए काम आए, उसके लिए हमें नई सोच और नई Initiative के साथ काम शुरू करना होगा। इस काम को पहले राज्यों को शुरू करना होगा। तब जाकर के उस दिशा में काम आएगा। उस दिशा में काम करने की आवश्यकता है।

Skill Development को हमने बहुत बल दिया है। लेकिन Skill development का भी, in general में Skill Development का फायदा नहीं होगा। अगर Chemical Industry का cluster है, तो उसकी Mapping करके वहीं पे Chemical Industry के अनुकूल Skill Development कैसे हो? IT Potential area है, तो वहां IT Professionals के लिए Skill Development कैसे कैसे हो? Solar energy के लिए Potential area है, तो वहां पर Skill Development नौजवानों को Solar energy के sector के लिए कैसे हो?

यह अगर हम Mapping करके, Matching करके Skill Development के Time table को बनाते हैं, तो हमारे नौजवानों को रोजगार के लिए अपने यहां से कहीं जाना नहीं पड़ेगा। उसको अपने ही दायरे में, अपनी ही क्षमता के आधार पर, अपने हुनर के आधार पर रोजगार मिलेगा। और इसलिए हमारी कोशिश है कि पूरे-पूरे भारत का Skill की Requirement के अनुसार Mapping होनी चाहिए। कहां कौन से cluster के Potential हैं, according to that - तो फिर कभी हमें रोजगार के लिए समस्याएं पैदा नहीं होगी। वरना आज क्या होता है? आपके रोजमर्रा ज़िंदगी में अनुभव आता होगा। एक तरफ नौजवान बेरोजगार है, और दूसरी तरफ आपके घर में नलका Repair करना है तो plumber नहीं मिल रहा है। यह mismatch जो है न, उसी ने तो कठिनाइयाँ पैदा की हैं। आप के पास गाड़ी है। ड्राइवर चाहिए। बेरोजगार नौजवान हैं, लेकिन आपको ड्राइवर नहीं मिल रहा है।

ये हम Requirement को ध्यान में रखकर के हम Skill development का मिशन चलाना चाहते हैं। और यहाँ भी, Public Private Partnership के model को हम बढ़ावा देना चाहते हैं। Private पार्टियाँ भी आएँ। आज हिन्दुस्तान में - आपको हैरानी होगी - the best quality के लाखों ड्राइवरों की जरूरत है देश में, लाखों ड्राइवरों की। इतने सारे नौजवान हैं। इतने सारे अकस्मात हो रहे हैं। क्या हमारी Public Private Partnership model पर जितनी भी Car Manufacturing कंपनियाँ है, ट्रक चलाने वाले associations हैं। क्या हम Driver Institution खड़ी नहीं कर सकते? The Best Quality के driver नहीं बना सकते? कहने का तात्पर्य ये है, कि हमें इन सारे कारोबार को बड़े Practical धरातल पर लाना पड़ेगा। जितना ज्यादा हम minute Planning करके हम Practical धरा पर लाएंगे, हम इसका परिणाम दे सकते हैं और परिणाम हमें देना चाहिए। और Skill Development को उस दिशा में हमने लेना चाहिए।

मैं समझता हूँ कि आने वाले दिनों में - Short Term Project, Long Term Project - इन दोनों को बल देना चाहिए। सिर्फ Long Term Project को बल देंगे और Short Term छोड़ देंगे, तो निराशा आ जाएगी, हो सकता है, शायद परिणाम भी न आए। हमें दोनों का मेल करना होगा। और दोनों का मेल करके हम काम करेंगे।

एक हमारे देश में कमी महसूस हुई। हमने हमारा देश का जो Academic World है, उसको विकास में हिस्सेदार नहीं बनाया है और मैं मानता हूँ इसके कारण देश को बहुत नुकसान हुआ है। आवश्यक है, कि Academic World, हमारी universities भी हो। हमारे Policy Maker हों Government के, Financial Institutions हों और Investor World हो। ये चार प्रकार के लोग बार-बार साथ बैठ करके विचार-विमर्श करना चाहिए, तब जाकर के हमारी University भी उस Syllabus को तैयार करेगी, कि भई अगर Medical Science में Stem Cell का युग आने वाला है, तो आज Medical में Stem Cell की education हो रही है कि नहीं हो रही है? Laboratory में Stem Cell के लिए आवश्यक प्रक्रियाएँ हैं कि नहीं हैं? Manufacturers Stem Cell के लिए जो Equipment Manufacturing करना चाहिए, वो उसको मालूम है कि नहीं है? अगर ये पूरा हम बैठ करके सोचते हैं, तब तो हम Perfect Planning कर सकेंगे। लेकिन हमारे Finance वाले Finance की जगह पर काम करते हैं, Investor सरकार के दरवाजे पर दस्तक देता घूमता-फिरता है। राज्य में बैठा है, वो चिल्लाता रहता है आओ-आओ Invest करो Invest करो और Academic वाला Article लिखकर के कपड़े उतारता रहता है। और इसी के कारण, जबकि हर एक की, अपनी शक्ति है, इस शक्ति का उपयोग करना बड़ा महत्वपूर्ण है। ये जितना Area-Specific होगा उतना बढ़िया होगा। In General भारत की बात करना बहुत सरल है, लेकिन वहाँ जा करके, बैठ करके, इस समस्या का रास्ता खोजना कठिन होता है लेकिन वो कठिन रास्ता ही हमें परिणाम दे सकता है।

अगर ऐसे Investors देश में 100 हो जाए तो Economy नहीं बदलती है, लेकिन राज्यों के अंदर एक एक हो जाए Economy बदलना शुरू हो जाती है। सही जगह यही है। अभी शिवराज जी वर्णन कर रहे थे। जापान, नेपाल, भूटान, बर्मा .. वो बोलने में तो बढ़िया बोलते हैं बहुत! देखिए इन दिनों विदेश में जो गया, जिन-जिन देशों ने भारत में पूंजी निवेश की बात कही है। एक प्रकार से मैं कहता हूँ- 100 बिलियन डॉलर ने वीज़ा के लिए Apply कर दिया है। जापान हो, चीन हो, अमरीका हो, 100 बिलियन डॉलर ने वीज़ा के लिए Apply कर दिया है। अब उस राज्य में दम चाहिए कि इसमें से जितना मार करके ले जाएं, रास्ता खुला पड़ा है। जो राज्य अपने आपको तैयार कर देगा, अपने आप को तैयार कर देगा, उसके लिए ये मौका है।

मैं हैरान हूँ, कि आपने कल्पना की है कि हिन्दुस्तान के Railway में भारत की Economy को बदलने का कितना बड़ा Potential है? जो Railway हिन्दुस्तान की आर्थिक तंदुरुस्ती को बदल सकता है, हमने 50 साल उस रेलवे की तंदुरुस्ती के पीछे खपा दिए। रेलवे हिन्दुस्तान की Economic Health को बदल सकता है, इतनी ताकत पड़ी है, लेकिन हम दिन रात यही सोचते रहे, बजट में से कुछ Money Pump करो यार, रेलवे बचाओ! रेलवे बचाओ!

भाइयों बहनों में विश्वास से कहता हूँ, एक दशक के अंदर हिन्दुस्तान में रेलवे में इतना Investment होगा, और 100% FDI की बात हमने कही है, बहुत बड़ा निर्णय किया है जी! और मैं रेलवे के सभी साथियों का अभिनंदन करता हूँ कि भारत सरकार के इस निर्णय पर रेलवे में काम करने वाले लोगों ने हमारी सराहना की है, हमारे साथ खड़े हैं। ये जो ताकत खड़ी हुई है। रेलवे में Investment जितना आएगा, रेलवे का नेटवर्क जितना बढ़ेगा, वो Environment Friendly Movement तो होगा ही होगा लेकिन भारत के गरीब से गरीब लोगों को रोजगार देने की संभावना उसमें पड़ी है। रेलवे सिर्फ यातायात नहीं, रेलवे अर्थगति को बढ़ाने वाली एक गतिशीलता देने वाली ताकत रखता है।

हमें speed बढ़ानी है। Infrastructure बढ़ाना है। Quality improve करनी है। Technology को improve करनी है। और इन सारी बातों को कर के एक अकेला रेलवे का क्षेत्र ही ऐसा है जो हिन्दुस्तान Economy में प्राण भर सकता है। इतने सारे क्षेत्र हैं। उन सभी क्षेत्रों को लेकर के हम चलेंगे। मुझे विश्वास है और इन दिनों देखा होगा आपने। Global Institutions जितनी Rating दे रही है, एक दम से भारत की रेटिंग बदल रही है, तेज गति से। जहाँ नीचे जा रहे थे, वहाँ अब तो प्लेट तो लग ही गया है। मैं विश्वास से कहता हूँ भाइयों बहनों, भारत की जो क्षमता है, उस क्षमता का भरपूर उपयोग भारत को आगे बढ़ाने में होगा। राज्यों को मिल करके एक और एक दो नहीं, एक के बगल में एक 11 की ताकत से आगे बढ़ेंगे।

मुझे विश्वास है, मध्य प्रदेश हिन्दुस्तान की Economy का एक driving force बन जाएगा। भारत के मध्य भाग का यह क्षेत्र पूरे भारत को Cater करने की ताकत वाला देश बन जाएगा। इस विश्वास के साथ मैं मध्य प्रदेश के जनप्रिय मुख्यमंत्री जी के उन उम्दा प्रयासों का हृदय से स्वागत करता हूँ। उनका सत्कार करता हूँ। हृदय से अभिनंदन करता हूँ। और उद्योग जगत के जो मित्र आए हैं, मैं उनको विश्वास दिलाता हूँ कि हिन्दुस्तान के किसी भी राज्य के किसी भी कोने

की कोई भी भूमि, भारत के किसी भी राज्य की, उसे दल मत जोड़िए, सिर्फ देश का सोचिए। किसी भी राज्य की भूमि होगी, और आगे बढ़ाना चाहते हो, केंद्र सरकार उस राज्य के साथ कंधे से कंधा मिलाकर के, किसी भी दल की सरकार क्यों न हो, मुझे देश को आगे ले जाना है। राज्यों की बदौलत देश को आगे ले जाना है। राज्यों की बदौलत देश को आगे ले जाना है। राज्य की ताकत के साथ आगे ले जाना है। राज्य की ताकत के साथ आगे ले जाना है। मैं आप सबको विश्वास दिलाता हूँ, भारत सरकार की यही भूमिका रहेगी।

बहुत-बहुत शुभकामनाएं, बहुत बहुत धन्यवाद।

एक थोड़ी गुस्ताखी करना चाहता हूँ।

एक तो मैं क्षमा मांगता हूँ कि बीच में से जा रहा हूँ। दूसरा, मैं शिवराज जी को बहुत सालों से जानता हूँ, उनके स्वभाव को भी जानता हूँ। और protocol कहता है कि वह मुझे Airport तक छोड़ने के लिए आएंगे। लेकिन देश की भलाई का agenda कहता है कि वह यहां रुकें। इसलिए मैं सार्वजनिक रूप से उनसे आग्रह करता हूँ कि वह Airport पर ना जाएं। प्रधानमंत्री वापस नहीं आएंगे, आप चिंता मत कीजिए। आप यहीं रुकिये, और इस समारोह को आगे बढ़ाइये। कृपा करके मत आइए।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

धीरज सिंह / महिमा वशिष्ठ / अमित कुमार / शिशिर चौरसिया / रजनी / तारा / सोनिका

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

17-नवंबर-2014 16:07 IST

क्वींसलैंड के प्रीमियर द्वारा आयोजित बिजनेस ब्रेकफास्ट के अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का भाषण

मैं सनातन हस्तियों, जिनकी धरती पर आज हम खड़े हैं, उनके पूर्वजों, विगत एवं वर्तमान, को नमन करते हुए अपनी बात शुरू करना चाहता हूँ।

प्रीमियर श्री न्यूमैन जी,

क्वींसलैंड के आर्थिक दिग्गजों के साथ ब्रेकफास्ट बैठक का आयोजन करने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

इस दावत में बड़ी संख्या में शामिल हुए लोगों के बीच मैं खुद को बहुत सम्मानित और प्रोत्साहित महसूस कर रहा हूँ।

जी 20 बैठक की शानदार मेजबानी के लिए मैं क्वींसलैंड और ब्रिस्बेन को मुबारकबाद देता हूँ। पिछले कुछ दिनों में आपने दिखा दिया है कि आपका शहर दुनिया का एक बेहतरीन शहर है।

क्वींसलैंड की अर्थव्यवस्था न सिर्फ पर्यटन, संसाधन और कृषि के क्षेत्र में अपनी पारंपरिक दृढ़ता के आधार पर, बल्कि उन्नत प्रौद्योगिकी और सेवा क्षेत्र में अपने निवेश के दम पर भी बढ़िया तरीके से काम कर रही है।

क्वींसलैंड में व्यापार, सरकार और आपके नेतृत्व को इसके लिए साधुवाद।

मैं यहां आकर अनेक कारणों से खुश हूँ।

पहला, मैंने न सिर्फ राष्ट्रीय राजधानियों के मध्य, बल्कि राज्यों के बीच परस्पर संबंधों पर सदैव जोर दिया है।

प्रीमियर न्यूमैन जी, आप और आपकी सरकार ने भारत के साथ आर्थिक अवसरों को आगे बढ़ाने के लिए बहुत काम किया है।

आपने भारत में कई व्यापारिक शिष्टमंडल भेजे हैं। इसी सितम्बर में गुजरात की राजधानी गांधीनगर में क्वींसलैंड-गुजरात ऊर्जा गोलमेज सम्मेलन हुआ था। मैं स्वाभाविक रूप से प्रसन्न हूँ कि क्वींसलैंड अपनी बुनियादी ढांचागत क्षमताओं के प्रदर्शन के लिए जनवरी 2015 में जीवंत गुजरात में भाग लेगा।

मैं जानता हूँ कि आप गुजरात के प्रति पक्षपाती नहीं हैं, बल्कि आप कोलकाता, दिल्ली और अन्य जगहों पर भी अपने प्रतिनिधिमंडल भेज रहे हैं।

दूसरा कारण है कि आज भारत आपका चौथा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य है, हमारे लिए क्वींसलैंड एक प्रमुख निवेश स्थान के रूप में उभर रहा है।

हम कोयला खनन में आस्ट्रेलिया के 16 अरब डॉलर के निवेश को संभव बनाने के लिए आपके प्रयासों का स्वागत करते हैं।

यह वार्ता भारत-आस्ट्रेलिया के बीच परस्पर सहयोग के नए मानक तय करेगी, कि ऊर्जा व अन्य महत्वपूर्ण संसाधनों के क्षेत्र में भारत की आवश्यकता पूरी करने में आस्ट्रेलिया और क्वींसलैंड कैसे जीवंत भागीदार हो सकते हैं।

क्वींसलैंड भारत के विकास में, विशेषकर - ऊर्जा, खनिज संसाधन, कृषि और खाद्य सुरक्षा, शिक्षा और उन्नत प्रौद्योगिकी के कुछ क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सहभागी हो सकता है।

हमने आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और लोगों का जीवन स्तर ऊपर उठाने के लिए बड़े पैमाने पर सुधारात्मक कदम उठाए हैं।

नीति के क्षेत्र में :

- * हमने रेलवे, रक्षा और बीमा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश कानूनों में ढील दी है।
- * हमने रेलवे में सुधार के लिए एक आयोग का गठन किया है, जिसे सरकार के ही एक अन्य विभाग के रूप में जाना जाता रहा है - ऐसा पहली बार हुआ है।
- * हमने श्रम सुधार शुरू किए हैं।
- * हमने कोयला, प्राकृतिक गैस और डीजल जैसे ईंधन के क्षेत्र में अपनी नीतियों में बड़े बदलाव किये हैं।

प्रक्रिया के क्षेत्र में :

- * सरकार की कार्यपद्धति को बदला है। सुशासन बदलाव का प्रारम्भिक बिंदु है। यह व्यवसाय के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि आम नागरिक के लिए।
- * हमने सरकार की पारदर्शिता को सुनिश्चित करने के लिए गैर जरूरी कानूनों-नियमों को समाप्त किया है और प्रक्रियाओं को आसान एवं छोटा बना दिया है।
- * व्यापार को आसान बनाने पर ध्यान दिया गया है।
- * हम राज्य सरकारों और यहां तक कि जिलों और गांवों के साथ भी साझेदारी कर रहे हैं।
- * डिजिटल इंडिया अभियान शुरू किया गया है।
- * सुविधा प्रकोष्ठ स्थापित कर दिए गए हैं।

संस्थानों के बारे में :

- * कौशल विकास के लिए नया विभाग स्थापित किया है।
- * औद्योगिक गलियारों के लिए विशेष प्राधिकरण बनाया गया है।
- * एकीकृत आवेदन प्रक्रिया के लिए सातों दिन चौबीसों घंटे चलने वाले ईबिज पोर्टल की स्थापना की है।
- * निर्णयों पर अमल की करीबी निगरानी करना।
- * व्यय सुधार आयोग की स्थापना।

पहल के संदर्भ में :

- * भारत में मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देने के लिए एक नए मिशन 'मेक इन इंडिया' का शुभारंभ।
- * विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे का निर्माण।
- * 100 स्मार्ट शहर, 50 शहरों में मेट्रो प्रोजेक्ट, 500 शहरों के लिए आधुनिक अपशिष्ट प्रबंधन व्यवस्था।
- * हरेक की पहुंच वाली सस्ती स्वास्थ्य देखभाल सेवा, 2019 तक सभी के लिए साफ-सफाई, हर व्यक्ति के लिए छत तथा

हर घर में बिजली।

- स्वच्छ ऊर्जा - सौर ऊर्जा पर विशेष ध्यान, ऊर्जा दक्षता
- जल संरक्षण
- स्वच्छ गंगा कार्यक्रम, जो एक प्रमुख शहरी नवीकरण और पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम है।

मैं आपसे सहयोग के लिए यहां महान अवसर देख रहा हूं। मैं उनमें से कुछ पर प्रकाश डालना चाहता हूं। • कोयला पहले ही भारत का एक प्रमुख निर्यात वस्तु है। मैं सामान्य रूप से संसाधनों में व्यापक संभावना देखता हूं क्योंकि भारत का औद्योगिक क्षेत्र गति अर्जित करता है और विकास करता है।

- हम भी क्वींसलैंड से द्रवीकृत प्राकृतिक गैस का आयात शुरू कर सकते हैं।
- आप खनन और खनन प्रौद्योगिकियों, सेवाओं और उपकरण, खनन परामर्श, खनन सुरक्षा, कोयला वाशरीज और खनन प्रबंधन के अनेक क्षेत्रों में अग्रणी हैं।
- मैं आपको भारत में भागीदारी के लिए आमंत्रित करता हूं। हमने अपनी नीतियों को पारदर्शी और उम्मीद के अनुसार बनाया है। हमने अपनी प्रक्रियाओं को स्पष्ट और सरल बनाया है।
- क्वींसलैंड भारत की खाद्य सुरक्षा को मजबूत बनाने में भी भागीदार बन सकता है। हमने फलों और सब्जियों का भारी मात्रा में और उर्वरकों का कुछ मात्रा में आयात किया है।
- कृषि आपूर्ति श्रृंखला के मूल ढांचे और खाद्य प्रसंस्करण के विकास के लिए उपज और कृषि उत्पादकता में सुधार लाने के लिए हमें एकीकृत भागीदारी और संयुक्त अनुसंधान की जरूरत है। यह मेरी सरकार के लिए एक प्रमुख प्राथमिकता वाला क्षेत्र है।
- मूल ढांचा - जिसमें हमारा अगले पांच वर्षों के दौरान एक ट्रिलियन डॉलर से अधिक निवेश करने का लक्ष्य है।
- प्रौद्योगिकी के उन्नत क्षेत्रों जैसे- जैव प्रौद्योगिकी और विमानन क्षेत्र में क्वींसलैंड की ताकत सहयोग के लिए व्यापक अवसर उपलब्ध कराने का प्रस्ताव करती है।
- हम सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तथा जीवन और व्यापार के सभी क्षेत्रों में इसके बढ़ते अनुप्रयोग के क्षेत्र में मजबूत सहक्रियाओं का विकास कर सकते हैं। मुझे उम्मीद है कि भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियां इस अच्छी पहुंच का लाभ उठाएंगी। इसके विपरीत डिजिटल इंडिया व्यापक अवसरों का प्रस्ताव करता है।
- क्वींसलैंड पर्यटन क्षेत्र में अपनी सफलता पर गर्व कर सकता है। भारतीय निवेशक आपका भागीदार बनने के इच्छुक होंगे क्योंकि अधिक से अधिक भारतीय आपके राज्य के असीम सौंदर्य और आतिथ्य के प्रति आकर्षित हो रहे हैं।
- आप भारत की बढ़ती शहरी आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए भारत की स्मार्ट, टिकाऊ और रहने योग्य शहर बसाने की महत्वाकांक्षी योजनाओं में शामिल हो सकते हैं। यह उम्मीद है कि वर्ष 2025 में विश्व की शहरी जनसंख्या का लगभग दस प्रतिशत हिस्सा भारत में ही होगा।
- आप निर्यात के लिए और उसे वापस आस्ट्रेलिया में आयात के लिए भारत को एक विनिर्माण केन्द्र बना सकते हैं।
- हम कौशल विकास, शिक्षा, अनुसंधान विकास में नजदीकी सहयोग को बढ़ावा दें। आपके विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों ने भारत और आस्ट्रेलिया के बीच बढ़ते हुए विज्ञान और प्रौद्योगिकी संबंधों में पहले से ही महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

- आस्ट्रेलिया-भारत सामरिक अनुसंधान कोष के तहत दोनों देशों के मध्य सहयोग एक सच्चाई है।
- मैं जानता हूं कि आप में से अधिकांश को भारत में उपलब्ध अवसरों के बारे में पता है और आपने बाजार का अवलोकन किया है। आपकी शुरुआत भारत में कुछ अलग पाने से ही होगी।
- इन अवसरों तक पहुंचने के लिए अब अनिश्चित, अप्रत्याशित रास्तों पर चलने और बाधाओं को पार करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।
- आप न केवल अवसरों को भागीदारी में बदलने में समर्थ होंगे बल्कि आप ऐसा उस माहौल में कर सकेंगे जो आपके व्यापार को सरल बनाने में मददगार है।
- मैं अंत में यह बात कहता हूं कि आस्ट्रेलिया और भारत के संबंध व्यापक हैं और उनमें आर्थिक सहयोग, बढ़ती सुरक्षा और सामरिक भागीदारी और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर बढ़ता हुआ सहयोग शामिल है, जो हमारे क्षेत्र में शांति, स्थिरता और समृद्धि के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।
- मैं आपके विचारों को सुनने का उत्सुक हूं। मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि हमारी टीम उनका अनुसरण करे। मैं आज सुबह यहां आने के लिए आप सभी को धन्यवाद देता हूं और आज का दिन आपके लिए बहुत मंगलमय हो, यह कामना करता हूं। धन्यवाद।

विजयलक्ष्मी कासोटिया/एम/आईपीएस/वीएस/एम -4893

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

11-दिसंबर-2014 18:38 IST

वर्ल्ड डायमंड कॉन्फ्रेंस में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के भाषण का मूल पाठ

Ladies and Gentlemen,

I am delighted that Delhi is hosting the World Diamond Conference. We are especially pleased that President Putin is here with us today.

He is a leader of India's key strategic partner and, personally, a great friend of India. In addition, Russia is the source of more than a quarter of the world's production of diamonds.

I understand that this is the first conference of its kind in the world. This is a source of great pride for us.

I want to congratulate and thank Gem and Jewellery Export Promotion Council, the Ministry of Commerce and Industry, and, the World Diamond Mark for organising this event.

India is the natural venue for this conference.

For one, it is generally believed that diamond is India's gift to the world. More than two thousand years ago, diamond was deeply valued in India. It was even traded with China over the Silk Route.

और अभी पुतिन जी बता रहे थे कि किस प्रकार से भारत का हीरा दुनिया में जगमगा रहा था।

It was even traded with China over the Silk Route.

Till about the 18th century, India was considered to be the only source of diamond.

Till of course, the world began mining for diamond in Africa. I am delighted that South Africa's Minister for Mineral Resources is with us today. Thank you, I welcome you here.

Today, India is the world's largest centre for cutting and polishing diamond and its largest importer of uncut diamond.

Diamond has become a universal symbol of wealth and enduring love. But, in India it is also a great source of jobs for our people. The Gems and Jewellery Sector in India employs nearly 3.5 million people; 1 million of them work in the diamond industry.

यानि अपने आप में Gems and Jewellery जहां पर करीब 35 लाख लोगों को रोजगार मिलता है, और उसमें दस लाख लोग सिर्फ डायमंड के क्षेत्र में काम कर रहे हैं।

India today exports cut and polished diamond worth 20 billion US dollars.

Surat has emerged as the biggest centre in the world for cutting and polishing diamonds.

और इसलिए मैं कभी-कभी कहता हूँ जैसे करीब-करीब 30 प्रतिशत डायमंड रशिया देता है और इसलिए मुझे लगता है कि हर डायमंड पर - जब डायमंड यात्रा करता है रशिया से तो हर डायमंड पर रशिया के कदमों के निशान होते हैं। लेकिन जब एक पॉलिश डायमंड निकलता है तो उसके ऊपर इंडिया की उंगली के निशान होते हैं।

It hosts enterprises with some of the most advanced technologies and machinery in the world.

Although the Bharat Diamond Bourse was established in 2010, it has become the world's largest exchange in the world.

Few in India would be aware that out of ten polished diamond pieces sold globally, nine have been processed in India.

यानि दुनिया का कोई भी व्यक्ति अगर हीरे-जवाहरात से सजा हुआ है, तो मान लेना कि दस में से नौ हीरो पर किसी न किसी भारतीय की उंगली लगी हुई है।

The diamonds sparkle in the world because of the skills of Indian workers.

So, we welcome the efforts of this conference and the World Mark Foundation to increase the global market for diamonds.

However, rough diamond in India comes from abroad. And, it mostly comes indirectly through places like Antwerp and Dubai. Of course, Antwerp trade is now run mainly by Indians.

While most of rough diamonds from Russia come to India, less than 20% comes directly to India.

We have with us today the head of Russian company Alrosa, which controls most of the production and trade in rough diamonds in Russia. It has direct sales contract with 7 to 8 Indian companies.

I know that there are representatives of many bourses here. But, I will be honest and say that I want major diamond mining companies to sell directly to the Indian diamond industry. It will be good for them and for India.

I have made three proposals to President Putin.

First, I would like Alrosa to have direct long term contracts with more Indian companies. I am pleased to know that they are moving in that direction.

Second, I want Alrosa and others to trade directly on our bourse. We have decided to create a Special Notified Zone, in which major mining companies can import rough diamonds on a consignment basis and re-export unsold ones. This is going to benefit Indian diamond industry and create more jobs for our youth.

Third, I asked President Putin to reform regulations so that Russian jewellery makers can send their rough diamond to India and re-import polished diamond without paying duty.

This will give a boost to our diamond industry. These measures will also boost India-Russia economic ties.

India and Russia have outstanding cooperation in a broad range of areas. We want to focus on transforming our economic relations. We want to make this a key pillar of our relationship.

Our joint partnership - here is an indication of our new approach to expand our economic partnership.

President Putin's enthusiasm for Russian participation in our Make in India programme will help expand manufacturing and create jobs for our people.

There are many other sectors in India, like the diamond industry, which have huge potential for creating employment and generating exports. Their modernisation and development is a great priority for my Government.

I am deeply encouraged by the level of international participation. In every sector of business, you will find that India not only offers productive business opportunities, but it is also easy to work in. You will find an environment that is welcoming and responsive.

Thank you all for coming.

एक बात और भी बता दूं - जब मैं ऑस्ट्रेलिया में President Putin से मिला था तो उस दिन मैंने, ऐसे चाय पर हम गप्पे मार रहे, थे तो मैंने बात निकाली। मैंने उनसे कहा कि आप डायमंड के संबंध में भारत के कारोबार को देखिए। आप सोचिए कि क्या हो सकता है। उन्होंने कहा, ऐसा करो, आप के इस विषय को जानने वाले व्यक्ति को मेरे पास भेज दो और उन्होंने अपने वित्त मंत्री को इस काम के लिए लगाया। और मैं देख रहा हूं कि हम ऑस्ट्रेलिया में मिले और उसके बाद आज मुश्किल से 15 दिन हुए हैं। लेकिन 15 दिन में इस विषय को उन्होंने बहुत आगे बढ़ाया। आज स्वयं भी यहां मौजूद रहे, और आज दिनभर भी इस विषय की काफी मेरी बात हुई है। और मैं मानता हूं कि रशिया और भारत डायमंड के क्षेत्र में अगर जुड़ जाए, तो सिर्फ डायमंड चमकेगा ऐसा नहीं, डायमंड पूरी दुनिया को चमकाएगा।

बहुत बहुत धन्यवाद।

DS/MV/तारा